शिवना नदी में आज भी मौजूद है सतियों के चबुतरे

इस नरसंहार के बाद उसने नगर में प्रवेश किया तथा कई कुमारिकाओं, महिलाओं एवं बालकों को भी तलवार के घाट उतार दिया। कई महिलाएं अपने पतियों के शिरों को गोद में लेकर उनके साथ ही चिता में बैठकर सती हो गई। इन सतियों के चबूतरे आज भी शिवना नदी में विद्यमान हैं। कहते हैं उस समय इतने लोग मारे गये कि उनकी जनेऊ का भार साढ़े 74 मन था। आज भी दशोरे इस 74 की आन को मानते हैं। इस प्रकार इन ब्राह्मणों का समूल नाश कर वह दशपुर में घुसा जहां उसने स्त्रियों एवं बच्चों पर जुल्म किये, सम्पत्ति को लूटा एवं अपनी इच्छाओं को पूरी कर आगे बढ़ा। इस कत्लेआम में उसने ब्राह्मणों को ही मारा एवं अन्य जातियों को जिसमें महाजन, घांची, मोची, तेली कुम्हार आदि थे उनको छोड़ दिया गया। जो लोग इस नर संहार से बच गये थे उन्होंने इन शवों का दाह संस्कार किया तथा मंदिरों में बची हुई अन्य मूर्तियों को भी जल में प्रवाहित कर दिया। शवों के दाह संस्कार के समय जो स्त्रियां सती हुई थीं उन्होंने शाप दिया कि कोई भी दशोरा इस दुर्ग में वास नहीं करेगा तथा शिवना नदी का जल नहीं पीयेगा।

(ब) मन्दसौर से पलायन- इसके बाद ये बचे हुए परिवार स्त्रियों एवं बच्चों को लेकर तथा आवश्यक वस्तुओं को बेलगाड़ियों में रखकर अपने पूर्वजों की भूमि को अंतिम प्रणाम करके अनजानी मंजिल की ओर चल पड़े। जाते समय इस नगर की मिट्टी को अपने मस्तक पर लगाया और प्रतिज्ञा की कि, ''जिस धरती पर हमारे हजारों भाईयों का रक्त गिरा है तथा जिस रक्त से शिवना नदी का जल लाल हुआ है हम प्रतिज्ञा करते हैं कि इस धरती के हम पुनः दर्शन नहीं करेंगे, और शिवना नदी का जल नहीं पीयेंगे। हमें साढ़े 74 की आन है।''

दशपुर में बची हुई सभी जातियों के लोग इस समय 1400 बैल गाड़ियों को लेकर इससे चारों दिशाओं की ओर रवाना हुए। जिनमें 350 मेवाड़ की ओर, 350 उत्तर प्रदेश की ओर, 350 मालवा, चित्तौड़ की ओर तथा 350 गुजरात की ओर चल पड़ी। इन जातियों में महाजन तेली, कुम्हार आदि सभी जाति के लोग थे जो दशपुर से जाने के कारण अपने आपको 'दशोरा' ही कहने लगे। विभिन्न दिशाओं में जाने वाले व्यक्ति आज भी दशपुर में की गई अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर रहे हैं। इनमें जो समुदाय दक्षिण की ओर गया वह नर्मदा पार जाकर बस गया। ये वास्तव में दशोरा ब्राह्मण ही थे जो व्यापार का कार्य करते थे इस कारण अपने को महाजन कहने लगे थे तथा इसी कारण से इनको कत्लेआम में छोड़ दिया गया था। ये लोग आज भी काफी संख्या में निमाड़ और मालवा में विद्यमान हैं। ये अपने आपको अब तक दशोरा ब्राह्मणों से भिन्न ही मानते रहे जबकि ये दोनों एक ही जाति एवं वंश के हैं। इन दोनों के कुल, गोत्र, अवंटक प्रवर आदि में पूर्ण समानता है। जो समुदाय मेवाड़ में पहुंचा उस समय वहां रावल रतनसिंह का चित्तौड़ शासन था। ये लोग इन्हीं की शरण में आये तथा यहीं बस गये।

क्रमशः

।। श्री गणेशाय नमः ।।

विजय स्टील डेकोर

35, धनवन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपार्टमेन्ट, दधिची चौराहा, इन्दौर फोन 2321578, मो. 98268-32786, 98936-24291

।। श्री सांई नमामि नमः ।।

फाइबर शीट मनभावन रंग एवं डिजाईन्स में रेडी स्टॉक में उपलब्ध
घर में बाल्कनी एवं सीढ़ीयों में उपयोग होने वाली
Railing Stair Case/Casting/Wrought Iron/Stainless Steel, Brass Exclusive
G.P. Fitting "Spring", Sanitary Fitting Gold Line. C.P.
की सम्पूर्ण श्रृंखला व सभी कम्पनियों के.जी.आई.पाइप के विक्रेता
सभी प्रकार के हार्डवेयर का सामान इन्दौर शहर के मूल्य पर
आपकी कालोनी में उपलब्ध
R.K. Dave (Pappu)

रेशमी सोला से जीन्स पेंट तक
मालवा क्षेत्र का नागर (ब्राह्मण) समाज तब और अब

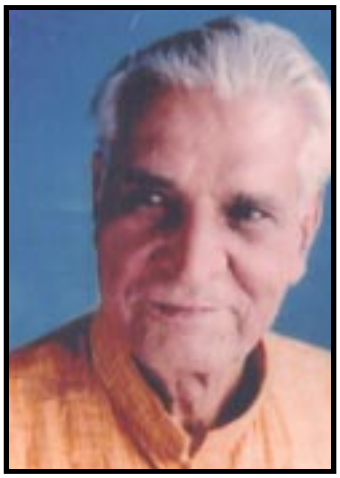

तब एक दिन बाल्यकाल में मित्र के घर कुछ नमकीन सेंव चख मात्र लिये थे। बात घर पहुंच गई। अच्छी पिटाई इसलिये लगी थी कि नागर ब्राह्मण बालक ने बाजार की बनी नमकीन सेंव क्यों कर मुंह में डाल लिये। नागर समाज की नई पीढ़ी को तो आश्चर्य ही होगा कि मेरे जैसी उम्र के नागर बंधुओं ने बीस वर्ष की उम्र तक यह नहीं जाना था कि बाजार की कचोरी, पकोड़ी नमकीन का स्वाद कैसा होता है। अन्य जाति के परिवारों, चाहे ब्राह्मण समाज ही क्यों न हो, किसी का बनाया या किसी के घर भोजन नहीं कर सकते थे। शुद्ध, सात्विक, कर्मकाण्डी नागर परिवारों को राजा, महाराजाओं, जागीरदार, जमीदारों, सेठ साहूकार आदि अपने यहां भोजन करने, कराने के इच्छुक रहते। निमंत्रण पर उनके निवास बाग बगीचों में नागर समाज की महिलाएं, पुरुष सोले के वस्त्रों में स्वयं भोजन बनाते, भोजन कर, यजमान परिवारों को भी भोजन रुपी प्रसाद देते। छूआ-छूत, स्पर्शता का यह आलम था कि मृत्यु के पश्चात भी परिवार के या जाति के सदस्य स्नान कर सोला में ही स्वर्गवासी की अर्थी उठा सकते थे। अन्य जाति का छूना या कंधा न देना, जाति परम्परा का हिस्सा था। 1950 तक यह परम्परा देखी है। यादें कौंध जाती है जब मुझे अपने कस्बे चाचौड़ा से गुना मिडिल बोर्ड परीक्षा देने जाने के कुछ दिन पूर्व दाल-बाटी आदि भोजन बनाने की ट्रेनिंग दी गई थी। होटल-हलवाई या किसी के द्वारा बनाया भोजन करने का प्रश्न ही नहीं था। वह समय भी था कि नागर परिवार के प्रवास में सोला, लोटा-डोर आवश्यक होते थे। ऐसी अस्पर्शता का नागर परिवारों में आलम देख अन्य परिवारों में छुआ-छूत को लेकर लोकोक्ति बन गई थी कि - 'बडो आयो तू नागर बामन'

नागर समाज गुजरात से सन् 1665 से मध्यभारत, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, महाकौशल क्षेत्रों में कब किन कारकों से कब-कब आता रहा, यह पूर्व में समय-समय पर विस्तार से लिखा जाता रहा है। लिखने का मेरा उद्देश्य मात्र मालव क्षेत्र के नई पीढ़ी के लिये है- जो विगत अस्सी वर्षों में मैंने देखा, भोगा और देख रहा हूं कि नागर ब्राह्मण समाज क्या था और समय के साथ क्या हो गया और यदि नहीं संभले तो क्या होंगे। जो भी घटना क्रम याद आता जा रहा है, प्रयास संक्षेप में लिखने का कर रहा हूं। किशोरावस्था में सुना करते थे। मालवा क्षेत्र में नागर समाज में अनेक फिरके थे। गुजरात से आकर जो समूह लसूडिया माताजी आकर रुका था शनैः-शनैः नगर में फैलता गया। उज्जैन,शाजापुर आसपास दूरस्थ क्षेत्रों में बसने वाले छयानवे ग्रामों के नागर छन्नू कहलाये इनमें भी, पीपलरावां, अकलेरा, लसूड़िया, रंथभंवर, सुन्दरसी, पांच गांव नागर समूह कहलाया। रतलाम के आसपास निकट बाईस ग्रामों के नागर बाईसी कहलाये। राऊ आदि ग्रामीण क्षेत्रों में बसे नागरों को राऊ रुपाखेड़ी कहा जाता। जो अधिकांश खेती के साथ पंडिताई भी करते। गुजरात के वड़नगर से आये अधिकांश नागर उत्तर प्रदेश, राजस्थान में से नागरों को वडनगरा संबोधित किया जाता। दशोरा दशनोरा, साठोत्रा नाम भी सुने जाते थे-परंतु उस समय आवागमन सीमित होने, एक दूसरे से न मिलने आदि कारणों से सामाजिक क्षेत्रों में चर्चाओं में ऐसा प्रतीत होता था मानों सभी नागर बंधु के होने के पश्चात भी कोई दूसरे नागर हों। कर्मकाण्ड, पांडित्य, सामाजिक व्यवहार, मान सम्मान में कोई भी एक दूसरे से कम नहीं समझता था। रोटी-वोटी तो बहुत बाद में प्रारंभ हुई।

गुजरात के निकट होने के कारण नागर समाज के विद्वानों का बड़ा समूह खंडवा के आसपास निमाड़ आदि क्षेत्रों में बसता गया। गुजरात से आने के पश्चात महिलाओं में परदा प्रथा तो नहीं थी परंतु इन क्षेत्रों की सामाजिक समानताओं के कारण स्थानीय समाजों के सम्मान और आलोचनाओं से बचने के कारण परदाप्रथा भी प्रारंभ हो गई।

इन प्रदेशों, क्षेत्रों में नागर नाम का कोई भी फिरका हो, शिक्षित, विद्वान, वेदशास्त्रों के ज्ञाता, धार्मिक कथाओं, की वाणी आयुर्वेद के पारंगत के कारण ही नहीं सर्व कार्यों, खान-पान, यज्ञोपवित, विवाहदारियों, कर्मकाण्डो में ऐसी शुद्धता, पवित्रता कि राजा महाराजा, जागीरदार, नागर समाज से प्रभावित हुए। अपने दीवान, कामदार, राजगुरु, राजवैद्य नियुक्त होने लगे। अन्य समाजों के लोग अपने अपने मंदिरों पर नागर समाज का पुजारी रखने के होड में लग गये। मंदिरों की पूजा ही नहीं निवास को मकान, खाने पीने भोग आदि की व्यवस्था हेतु कृषि भूमियां भी मंदिर के नाम की गई। स्थानीय समाजों में नागर समाज की नैतिकता, कर्मकाण्डों के प्रभाव के साथ देखा गया कि यह समाज धूम्रपान, नशा से दूर, विवाह शादियों में सादगी, दहेज प्रथा का न होना सम्मान का बड़ा कारण था।

कुछ उपवादों को छोड़ आज तक समाज इन दुर्गुणों से दूर नहीं है। समाज की एक मानवीयता अनुकरणीय है कि परिवार दादा-दादी का हो या नाना-नानी का, तीसरी चौथी पीढ़ियों से भी विवाह शादियों, दुख-सुख के भागीदार चाहे कितनी दूरी पर क्यों न हो परम्परा के आत्मीय संबंध बनाये रखना- नागर समाज के पारिवारिक गुणों में माना जाता है। इन सामाजिक गुणों के कारण राजा, महाराजा, जागीरदारों और अन्य समाजों ने पूजनीय सम्मान ही नहीं दिया परंतु आजादी के पूर्व ब्रिटिश शासकों ने मालव माटी के तराना निवासी श्री दुर्गाशंकर त्रिवेदी को इनकी सेवाओं को देखते हुए राय साहेब की पदवी से विभूषित किया था। परन्तु राय सा. ने आजादी पश्चात यह पदवी शासन को वापस कर दी थी। फिर भी समाज में नाम राय साहब चलता ही रहा। विदेशी सत्ता को उखाड़ने में नागर समाज गुजरात में सर्वप्रथम गांधीजी के साथ

आगे आया था-इस आजादी के संघर्ष में मालवा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानी पीछे नहीं रहे। खंडवा से श्री भगवंतरावजी मंडलोई, उज्जैन से श्री राधेलाल व्यास, श्री नारायण दत्त रावल (नारायण देव तीर्थ) श्री विश्वनाथ त्रिवेदी भूतेश्वर, श्री कांतीलाल मेहता शाजापुर के श्री किशोर भाई त्रिवेदी, राऊ इन्दौर से श्री नन्दलाल व्यास श्योपुर से मेरे साथ रहे स्व. हरीशंकर झा आदि ने जेलों की यातनाएं सहते हुए स्वतंत्रता के यज्ञ में अपना योगदान दिया। इतना ही नहीं अनेक नागर युवकों, परिवारों ने स्वतंत्रता संग्राम में भूमिगत रहते, प्रचार माध्यमों आदि से भारतमाता की बेडियां काटने में अपना योगदान दिया था। अमर शहीद भगतसिंह के क्रांतिकारी साथियों को पंजाब, उत्तरप्रदेश में नागर परिवार की दुर्गा भाभी के योगदान का इतिहास साक्षी है। गुजरात मालवा क्षेत्र ही नहीं, महाकौशल, उत्तरप्रदेश,सी.वी. वरार, राजस्थान आदि प्रान्तों के नागर बंधुओं का आजादी आन्दोलन के इतिहास पर पुस्तक लिखी जा सकती है। आध्यात्मिक योग साधना, चरित्र निर्माण द्वारा स्वदेशी आन्दोलन को शक्ति देते रहने में उज्जैन के श्री दुर्गाशंकरजी नागर का नाम देश प्रदेश में सुनाई देने लगा था। उनके द्वारा प्रकाशित कल्पवृक्ष पत्रिका तो स्वतंत्रता के बहुत पश्चात तक उनके संदेश देती रही।

मालव माटी ने नागर समाज को योग्य अ.भा. प्रशासनिक अधिकारी दिये। इनमें श्री एस.पी. मेहता, श्री एल.ओ. जोशी, श्री ओमवल्लभ नागर, श्री विनोद मंडलोई, श्री नीरज मंडलोई जैसे अधिकारियों ने चारों और भ्रष्टाचार के दावानल से साफ-पाक रहते हुए समाज को बड़ा सम्मान दिलाया। धार्मिक क्षेत्र प्रवचनों द्वारा नागर समाज की प्राचीन परम्परा चालू रखते हुए गौभक्त, मालव संत पं. कमल किशोरजी नागर ने तो धार्मिक प्रवचनों से नागर समाज का सर ऊंचा कर दिया। वहीं नलखेड़ा की बाल विदुषी संत वर्षा नागर, उज्जैन के युवासंत आशीष नागर और उदयीमान पत्रकार श्री विजयशंकर मेहता के धार्मिक प्रवचनों ने समय के साथ नई दिशा प्रदान की। मालवा क्षेत्र के नागर समाज की अन्य अखिल भारतीय एवं राज्यस्तरीय प्रतिभाओं की पत्रकारिता क्षेत्र में पद्मश्री का गौरव श्री आलोक मेहता को प्राप्त हुआ।

इसी क्षेत्र में उज्जैन नागर समाज के स्तंभ स्व. गोरधनलालजी मेहता ने साधनों के अभाव, अन्य पूंजीपति समाचार पत्रों की स्पर्धाओं के मध्य 1961 से दैनिक अवंतिका का उज्जैन से प्रकाशन उनकी लगन व सूझ-बूझ का परिचायक ही कहा जावेगा। पत्रकारिता और साहित्य क्षेत्र में शाजापुर के श्री विष्णु नागर भी न भूलने वाली प्रतिभा है। साहित्य क्षेत्र में शाजापुर निवासी श्री शरद जोशी, श्री प्रभाकर श्रोत्रीय, कथाकार श्री सूर्यकांत नागर, अर्थशास्त्री डॉ. विष्णुदत्त नागर, श्री निरंजन श्रोत्रीय गुना भोपाल के गांधीवादी अर्थशास्त्री डॉ वल्लभदास जी मेहता सहित आयुर्वेद क्षेत्र में पं. वासुदेव शास्त्री को मालव माटी स्मरण करती रहेगी। आज स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर को उच्च शिखर पर पहुंचाने वाले जनरल मैनेजर स्व. एन.डी. जोशी को समाज कैसे भूल सकता है। स्वतंत्रता के पूर्व मालव क्षेत्र में समाज में इंजीनियर नाम ढूंढना कठिन था। ऐसे युग में पूर्व राजगढ़ स्टेट में बाबू कृष्ण वल्लभजी नागर ने विद्युत और वाटर वर्क्स का सफल संचालन किया था। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में नागदा से सोहन नागर ने कोरिया, थाइलेण्ड, फिलिपिन्स में कारखाने स्थापित करने में प्रतिभा का परिचय दिया था। पर्यावरण क्षेत्र में श्री राकेश त्रिवेदी हों अथवा अ.भा. राष्ट्रीय युवा योजना के संयोजक डॉ. महेन्द्र नागर के साथ शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रपति पुरुस्कार प्राप्त गुरुजनों की भी बड़ी सूची है। मालव क्षेत्र में नागर समाज को संगठित करने में स्व. मांगीलालजी मास्टर, स्व. विष्णु प्रसादजी नागर, स्व. स्वामीनारायण देवतीर्थ, स्व. श्री वल्लभजी शास्त्री सोनकच्छ, स्व. श्री गजानन्दजी शर्मा खंडवा, वैद्य कृष्णवल्लभजी नागर की सेवाएं भूली नहीं जा सकेगी। देश में म.प्र. ही ऐसा एक मात्र राज्य है जहां शासन द्वारा नागर समाज के आराध्य देव की 'हाटकेश्वर जयंती' को छुट्टियों की सूची में रखा गया है। इस छुट्टी को प्रारंभ कराने में मेरे साथ खंडवा की विधायक श्रीमती नन्दा भाभी और शाजापुर के श्री वीरेन्द्र व्यास का योगदान भी भुलाया नहीं जा सकेगा।

पूर्व में उल्लेखित स्मृतियों में समय देखते हुए जहां छुआ-छूत, अ-स्पर्शता, पूजा पाठ पांडित्य आदि के कारणों से नागर समाजों में विशेष आदरणीय स्थान बना लिया था वहीं नागर समाज की महिलाओं ने इसे निभाने में जो योगदान दिया अथवा यूं कहें कि आज की वर्तमान स्थिति देखते हुए वह एक प्रकार की कठिन तपस्या की अग्नि परिक्षा ही कही जावेगी। समाज के चन्द परिवारों को छोड़ अधिकांश मध्यमवर्ग, अभावग्रस्त परंतु संतोषी, धर्मकर्म का पालन करने वाला ही था। सूर्योदय के पूर्व से ही महिलाओं को आटा पीसने की चक्की संभालना, पशुओं की सेवा, मंदिर, पूजागृह की सेवा व्यवस्था इसी के साथ गोदी के छोटे-छोटे बालक, बालिकाओं की देख-रेख तो थी ही -सोले, धुली सूती साड़ियों (जिसे अबूड़या नाम सुना गया था) चोके में भोजन पकाते किसी को स्पर्श न करना आदि उस युग का कर्तव्य था। महिलाओं की प्रसूती के दिनों का वर्णन आज कोई सुने तो रुह-काप जाती है। अंध विश्वासों के कारण प्रसूती के पश्चात महिलाओं, नवजात शिशुओं की मृत्यु दर अधिक थी। चिकित्सा का अभाव बाल विवाह, झाड़ा-फूंकी, बालिकाओं, युवतियों को जीवन भर वैधव्य की घटनाओं को देख-सुन हृदय झकझोर जाता था। ऐसी स्थिति देख उस युग में शाजापुर की युवा नागर मंडली ने समाज में कुरीतियां, विधवा विवाह, अस्पर्शता, सोले के स्थान पर धुली धोती पहिनने का आन्दोलन चलाया। समाज में उस समय कट्टरपंथियों का भारी विरोध और आलोचना होती थी। समाज सुधार की चेतावनी को अनदेखा करने का परिणाम हुआ कि रुढ़ीवादियों ने समय की गति नहीं पहचानने से समय ने अपना प्रभाव दिखा ही दिया। सोला परिधान बुफे में आ धमका। विगत दस पन्द्रह वर्षों में देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक नीतियों के कारण जीवन व्यापार ने लोगों के मन में अर्थचिंतन की ऐसी लालसा बढ़ा दी है कि उसे प्राप्त करने की धुन में व्यक्ति हो या समाज, आंख बन्द कर दौड़ता चला जा रहा है। नई पीढ़ियों को बहुत संभल कर चलने की जरुरत है ''रजाई के बाहर पैर न निकालने'' में ही जीवन सुखी रहेगा। शादी-विवाह आदि सामाजिक कार्यक्रमों में सम्पन्नता का झूठा अनावश्यक दिखावा आने वाले युग में परेशानी का कारण बन सकता है। नागर समाज की जड़ में जो सभ्यता, संस्कार, मानवीयता अभी भी बहुत कुछ दिखाई देती है। उन्हें न भूलने में ही सुख शांति के साथ समाज और व्यक्ति की प्रतिष्ठा बनी रहेगी। जो लिखा मेरी याददाश्त पर आधारित है। अनेक प्रतिभाओं के नाम अवश्य छूट गये होंगे। क्षमा प्रार्थी हूं। किन्हीं स्वजनों को याद आवे तो पत्र द्वारा इन पत्रिकाओं के माध्यम से अवश्य दें।

-प्रेमनारायण नागर, शिवपुरी

सपने में स्वर्ग

एक रेशमी, पीले वस्त्रधारी, सुनहरे मुकुटधारी व्यक्ति ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। मैं चौंक गया। 'आप कौन?' मैंने पूछा। चलो मेरे साथ उसने कहा। पर कहां? क्यों? उसने कोई जवाब नहीं दिया। मेरी बांह कसकर पकड़ रखी थी उसने। छुड़ा न सका। आप हो कौन यार?

बात क्या है?

मैं यमदूत हूं। तुम्हें लेने आया हूं। भगवान का ऑर्डर है उसने कहा।

पर भैय्या मेरी अभी इच्छा नहीं है, मेरी बात को समझने की कोशिश करो मैंने विनती की।

तुम्हारी इच्छा? अरे तुम्हारे डिपार्टमेन्ट में ट्रान्सफर तुम्हारी इच्छा से होते है या तुम्हारें ऊपर वाले की? यहां भी ऊपर वाले का ऑर्डर है। तुम्हें स्वर्ग में भगवान ने बुलाया है।

पर मेरा परिवार, नौकरी, ऑफिस की चाभी, मेरा पीएफ, ग्रेच्युटी और... बच्चों के भी एक दो जरुरी काम थे यार। दो तीन फोन भी अर्जेन्ट में लगाना थे। एक अच्छा सा म्यूजिक प्रोग्राम भी अटैंड करना था मैं एक सांस में सब कह गया।

अब तो तेरे बाजे बजेंगे धरती पर। रघुपति राघव...। सीधे से चल मेरे साथ। भगवान से ही कहना सब बातें। वह बोला। चलो भैय्या, चलता हूं पर कैसे जाते है स्वर्ग? मेरा मतलब कन्वेन्स और रास्ते में कोई चाय वगैरह... मैने पूछा। उड़कर। जानता नहीं? हम लोग उड़ते है। जवाब मिला।

खैर, उड़ने लगे। वह और मैं। स्वर्ग पर लैण्ड किया तो समझ में कुछ नहीं आया। नया माहौल, नए लोग। पूरा स्वर्ग साफ सुथरा, एयर कन्डीशंड। लोग क्या ये, सब के सब, भगवान जैसे। यमदूत ने एक भगवान के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। आ गए तुम? पूछा गया।

यस सर। मैं बोला। जॉइनिंग रिपोर्ट दो और रजिस्टर में साईन कर दो। अभी जूनियर हो, जरा तमीज से रहना हिदायत मिली, जैसे कॉलेज में पहले दिन किसी नए लड़के के साथ होता है।

स्वर्ग में भगवानों के भी अलग-अलग डिपार्टमेन्ट थे। व्यवस्थाएं भी बहुत उम्दा। हर भगवान से एप्रोच भी आसान नहीं थी। उनके ठाट-बाट देखते ही बनते थे। बाहर की सजे-धजे महंगे लिबासधारी और स्वर्णमुकुटधारी कई दूत पहले ही चेकिंग कर लेते। जैसा अपने यहां किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में पुलिस वाले करते हैं। मेरा नाम लिख दिया गया। पर्ची कट गई। आयडेन्टिटी-कार्ड इशू हो गया। स्वर्ग में रहने का टेम्पररी लायसेन्स मिल गया। (जैसा अपने यहां आर टी ओ से कम उम्र वालों को बिना गियर की गाड़ी का मिलता है।)

पहले इसको यूनिफॉर्म इशू करो और इसका क्लीन शेव करके वेशभूषा सही करो। यमराज ने चुटकी बजाई। एक सुन्दर अप्सरा सजी हुई थाली में पीले, रेशमी वस्त्र और जूतियां लेकर हाजिर हो गई। लगा जैसे मामेरे की थाली सजकर आई हो। मैं तैयार हो गया। थोड़ा-थोड़ा भगवान जैसा दिखने लगा। बरसों से सुन रखा था कि मरने के बाद आदमी भगवान हो जाता है। मन ही मन खुश हो गया कि अपन भी भगवान हो गए। आईने में अपने आपको देखकर प्रसन्न हो गया। मुगालते बढ़ गए। पृथ्वीलोक बैकवर्ड एरिया लगने लगा।

मुझे शंकर-पार्वती से मिलना है, बहुत उपासक रहा हूं उनका। सोमवार के व्रत भी रखें मैंने। यहां पर आया हूं तो जरुर मिलूंगा। दूर्गा,काली और लक्ष्मीजी से भी। विष्णुजी और उनके अवतार कृष्ण कहां मिलेंगे? मैने एक देवदूत से पूछा।

विष्णु और शंकर तो ऐसे बोल रहा है जैसे अपने घर के नौकरों के नाम हों। भगवान शिवशंकर से मिलना है। ऐसे बोल। देवी पार्वती हैं वो। तुम्हारे पृथ्वीलोक की कोई पार्वतीबाई नहीं। देवी हैं देवी। जॉईन करते देर हुई नहीं और बोर्ड के मेम्बर्स से मिलवा दो इसको। बातें बड़ी-बड़ी। दुर्गा, काली, लक्ष्मी तो ऐसे फटाफट बोल रहा है जैसे ये सब तुम्हारे घर की कामवालियां हों। दस साल से ज्यादा की सीनियॉरिटी है यहां हमारी। भगवान विष्णु और कृष्ण भगवान को सीधे नाम लेकर तो हम भी नहीं बोलते। छः महीने में तो यहां कन्फर्म ही करते हैं। तुझे आए तो छः घंटे भी नहीं हुए। भगवान शिवशंकर की तीसरी आंख खुल गई तो यहीं खड़े-खड़े भस्म कर देंगे। देवियों के दस-दस हाथ हैं। एक ही पड़ गया तो दस दिन तक बिस्तर से नहीं उठेगा। छोटे-छोटे भगवान मुझे डांटे जा रहे थे।

मेरे साथ कॉलेज के फर्स्ट ईयर के लड़के सा व्यवहार हो रहा था। पर मैंने तो सुना था कि भगवान बड़े दयालु होते हैं, वे भक्त से मिलने को मना नहीं करेंगे। तुम कोशिश तो करो मैंने एक से निवेदन किया। तुम धरती के लोगों को हम खूब पहचानते हैं। देवदूत बोला। पटाकर काम निकालना जानते हो। स्टेनो को पटाकर साहब के केबिन में। लौटते समय स्टेनों याद भी नहीं आता। मुख्यमंत्री से सीधी बात हो जाए तो छोटे-छोटे अफसर की परवाह नहीं करते। ऊपर से फोन करवा देते हो और हम नीचे वाले परेशान होते रहते हैं। अच्छा हुआ भगवान ने तुम भ्रष्ट इंसानों से पैसे-प्रापर्टी सब कुछ स्वर्ग आने से पहले धरती पर ही छीन लिया नहीं तो तुम आज अन्दर जाने के लिये हमें नोट दिखाते। तुम इंसान निकृष्ट और स्वार्थी जीव हो। काम के टाईम भगवान याद आते हैं। भगवान की झूठी कसम खाते हो। व्रत करके भूखे रहोगे और एहसान भगवान पर। तुममें से कईतो खाने में चेन्ज लाने के लिए उपवास करते हैं। हमको सब समझता है। गंगा के पानी में डुबकी लगाकर खुद को स्वच्छ और पवित्र मान लेते हो। श्राद्ध-पक्ष में खाने के बहाने बना रखे हैं तुम लोगों ने। मंदिर में प्रसाद चढ़ाकर खुद ही खा लेते हो और इस बहाने अपने वालों को मिठाई बांटते हो। अपने घर के नियम चला रखे हैं तुम लोगों ने, अपना मन समझाने के लिए। तुम पृथ्वीलोक वालों को तो चमका के रखो तो ही ठीक रहते हो। कृष्णा तो बहुत बड़े रईस हैं। दुर्गा मैया के पास पॉवर्स हैं। उनके पास शक्ति नहीं होती तो क्या तुम उनकी पूजा करते? उनकी ताकत का लोहा मानते?

तुम इंसानों की जात बिना ताकत और चमत्कार देखे नहीं मानती। मां लक्ष्मी का धन से रिश्ता नहीं होता तो तुम बेचारी को लक्ष्मीबाई बनाकर भीख मंगवा देते। देवगण मुझे फटकारे जा रहे थे।

मुझे माँ लक्ष्मी से एक बार मिलवा दो ना यार मैंने बात काटकर विनती की।

वो ऐसे नहीं मिलती। बहुत मेहनत करना पड़ती है। बहुत पॉवरफुल हैं वो। पूरे वित्त विभाग की इंचार्ज है। किसको क्या बांटना है, क्या देना है सब उन्हीं की साईन से चलता है। विष्णु भगवान की वाईफ हैं, वह पॉवर एडीशनल है उनके पास। सब सोच-समझकर बांटती है। ज्यादा बंट जाए तो कईयों से छीनना भी पड़ता है। वापिस। अभी अमेरिका को निपटाया उन्होंने। चंचल हैं। पूरा शेयर मार्केट हाथ के नीचे है उनके। उनका कार्यालय स्थायी नहीं है। कब कहां मिल जाए निश्चित नहीं। मोबाईल कोर्ट जैसी हैं। ज्यादा लालच मत करना उनका। कईयों के दिमाग बिगड़ गए उनके चक्कर में।

कृष्ण भगवान का दरबार? मैंने पूछा।

वहां जाकर क्या करेगा? उनके वहां जेन्ट्स लोगों का क्या काम? पूरा लेडीज स्टॉफ है उनके पास। वो भी ज्यादातर बिलो ट्वेन्टी-टू। उनके दरबार में मिलती है, पूजा, अर्चना, आरती, श्रद्धा, तृप्ति, मुक्ति। इनमें एक भी जेन्ट्स हो तो बता। कल रात को ही कृष्णा नाईट थी यहां। बेहतरीन बांसुरी वादन। तुम्हारी धरती के लता, मुकेश, रफी, किशोर, मन्ना डे और हिमेश रेशमिया के गीत भी बजाते हैं बांसुरी पर। कृष्णा बजाते हैं और लड़कियां नाचती है यहां। वह बोला।

हमारे यहां शादियों में संगीत-निशा वगैरह जैसा कुछ होता होगा। फिल्मों में भी कई बेहतरीन डांसर्स हैं- शाहरुख, गोविन्दा, सलमान, अक्षयकुमार, माधुरी, करिश्मा, एश्वर्या...। मैंने कहा

अबे यह स्वर्ग है। माधुरी-एश्वर्या जैसी कई यहां बरतन मांजती है। शाहरुख, गोविन्दा, सलमान जैसे कई सफाई कर्मचारी है यहां। अक्षय-वक्षय कुमार जैसे कई झाड़ू लगते हैं उसने मुझे नीचा दिखाते हुए कहा।

मां सरस्वती...? मैंने संकोच में एक नाम और ले ही लिया

हां, वहां सब दिमाग का काम है। कहकर उसने मुझे तिरछी नजरों से ऊपर से नीचे तक घूरा। पढ़े-लिखे लोगों के काम हैं वहां। ध्यान से सुन, अभी वीणा बजा रही हैं। उनकी कृपा से धरती पर बड़ी-बड़ी खोपड़ियां चल रही हैं।

मैं आगे चलकर एक आलीशान महल के सामने जाकर ठिठक गया। बड़ा सा हॉल। चारों ओर सोना-चांदी और हीरे-जवाहरात। बाहर ढेरों पहरेदार देवदूत। सभी जेवरों से लदे हुए। पता चला अन्दर कोई बोर्ड मीटिंग चल रही थी। बाहर खड़े एक छोटे-मोटे भगवान ने बताया कि ब्रह्माजी, विष्णुजी, शिवजी और बहुत से पॉवरफुल डायरेक्टर्स आए हुए थे। उन्होंने बताया, अन्दर हेड-ऑफिस के टॉप लेवल से देवी-देवता और अन्य वीवीआईपी बैठे थे।

अन्दर जबर्दस्ती घुसने के चक्कर में नींद टूट गई। मैं बिस्तर पर पड़ा था। आँखे फिर से बन्द कर लीं ताकि स्वर्ग का सपना जारी रहे पर फिल्म खत्म हो चुकी थी। टूथ-ब्रश करते-करते स्वर्ग का सारा नशा उतर गया। फिर वहीं ऑफिस, वही काम। वही संसार और दुनियादारी। जीना यहां मरना यहां इसके सिवा जाना कहां।

विनय नागर
125, पलसीकर कालोनी, इन्दौर
मो. 98934-49974, 98939-44336

जय हाटकेश
सिर्फ नागर बंधुओं हेतु
जय श्री कृष्णा
व्यापारी बनें
मात्र 500/-रुपए से शुरू करें...
हमारे उत्पादन
* जालिम-एक्स मलम
* जालिम-एक्स
* जालिम-एक्स लोशन
* पंचसुधा
* वामा क्रीम
* मेकाडो बाम
* अंजू बाम
* पेन ऑफ ऑईल
* पेन क्योर आइंटमेंट
* हज़म टेबलेट
* अंजू कफ सायरप
* अर्शोमृत टेबलेट
* सुगम चूर्ण
* पाचक चूर्ण
* नारी रसायन
आप हमारे उत्पादन MRP. से आधे दाम पर प्राप्त करें और MRP. पर बिक्री करें।
अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें-
नवीन झा
अंजू फार्मास्यूटिकल्स
111/112 अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इंदौर- 452001- (म.प्र.)
मोबाइल नंबर- 09425062415

' 'इ', 'उ' और 'ऊ' से नाम आ जाए तो.....

घर में पुत्र-पुत्री रत्न के जन्म के बाद कोई समस्या होती है तो वह है 'नाम' रखने की। इसीलिए जय हाटकेशवाणी ने एक दम नए नामों का संयोजन किया है। बाकि अक्षरों के लिए आगामी अंक देखते रहें।

इ	3. इति	26. इलिका	2. ईकोर	7. उपांत	30 उत्तरीय	10 उमंग	33 उपासना	56. उपास्ति
1. इंगित	4. इला	27. इल्तिजा	3. ईषत्	8. उदधि	31 उत्तमर्ण	11 उपकारिका	34 उत्तमा	57. उष्णिमा
2. इरावान	5. इड़ा	28. इंगला	4. ईशान	9. उत्सव	32 उत्पल	12 उजास	35 उत्पलिनी	**ऊ कन्या**
3. इक्षु	6. इभ्या	29. इंजील	5. ईषिर	10. उदज	33 उत्सेक	13 उषसी	36 उत्प्रेक्षा	1. ऊर्वी
4. इक्ष्वाकु	7. इल्वरी	30. इंदीवरी	**कन्या**	11.उदर्चि	34 उद्भास	14 उपज्ञी	37 उत्सवा	2. ऊर्मि
5. इभानन	8. इभी	31. इंदुलेसा	1 ईशा	12. उल्मुक	35 उन्मेष	15 उपमिति	38 उदर्चि	3. ऊष्मा
6. इरेश	9. इष्टि	32.	2 ईषिकता	13. उर्वर	36 उपनीत	16 उपमा	39 उदंजलि	4. ऊर्जा
7. इदम	10. इशारा	33. इद्रपर्णा	3 ईप्सा	14. उन्मन	37 उग्रेरता	17 उद्वहिनी	40 उदन्या	5. ऊष्णिमा
8. इछुर	11. इमि	34. इंदुकांता	4 ईषा	15. उरस्क	38 उत्प्रास	18 उपश्रुति	41 उदया	6. ऊर्विजा
9. इत्वर	12. इषिका	35. इंद्रायनी	5. ईशानी	16. उत्तीर्ण	39 उत्क्रोश	19 उपाधि	42 उदिता	7. ऊर्मिका
10. इष्म	13. इषुधि	36. इंशा	6. ईश्वरा	17. उत्क्राम	40 उद्योत	20 उन्मिति	43 उदीची	8. ऊर्वा
11. इषव्य	14. इशा	37. इक्षुगंधा	7. ईक्षिका	18. उद्रेक	41. उन्नय	21 उक्ति	44 उत्तरा	9. ऊषणा
12. इडस्पति	15. इछुरा	38. इज्या	8. ईशिता	19 उदात्त	42. उपांशु	22 उपधा	45 उद्गीति	10. ऊधर्वा
13. इदंतन	16. इडिका	39. इदंता	9. ईक्षा	20 उद्वेग	**कन्या**	23 उपनिति	46 उद्यमा	11. ऊर्म्या
14. इंदंबर	17. इशीका	40. इक्षुमती	10. ईषणा	21 उत्कट	1. उदिति	24 उक्षा	47 उन्नति	**पुत्र**
15. इन्द्रेज्य	18. इषीका	41. इन्वका	**उ**	22 उन्मद	2 उष्मा	25 उत्काष्ठ	48 उन्मिति	1. ऊर्जन
16. इंद्रायुध	19. इरा	42. इबरत	**पुत्र**	23 उद्देष्टा	3 उदीची	26 उत्सवा	49 उपकृति	2. ऊर्जस्वी
17. इष्पल	20. इंगुदी	43. इरिका	1. उत्स्त्रोत	24 उपश्रुत	4 उष्णिमा	27 उदया	50 उपदा	3. ऊर्जायन
18. इष्वतीक	21. इक्ष्वालिका	44. इरावती	2. उत्कल	25 उत्रंस	5 उग्रा	28 उन्मिति	51 उपाधि	4. ऊर्ज
19. इष्वास	22. इंगिता	45. इषण्या	3. उद्देश्य	26 उत्संग	6 उल्का	29 उत्प्रेक्षा	52 उर्वरा	5. ऊर्णायु
कन्या	23. इच्छा	**ई**	4. उत्तर	27 उपभान	7 उष्णा	30 उत्तमा	53 उल्कुषी	6. ऊर्जस्वी
1. इशिता	24. इयत्ता	**पुत्र**	5. उत्स्य	28 उन्नमित	8 उलूपी	31 उत्सवा	54 उर्ती	7. ऊर्ध्व
2. इंदुजा	25. इशरत	1. ईशु	6. उदीच्य	29 उत्सर्ग	9 उत्क्रोश	32 उर्विजा	55. उपमा	8. ऊधन्य

(उपरोक्त नामों के अर्थ)

इ अर्थ (पुत्र)- 1. संकेत, 2. मेघ, 3. सात पौराणिक सागरों में एक, 4. एक, 5. गणेश, 6. वरुण देवता, विष्णु, 7. यह संसार, 9. यात्री, 10. कामदेव, वसंत ऋतु, 11. बाणविद्या में कुशल, 12. विष्णु, 13. वर्तमान, 14. कमल, 15. बृहस्पति, 16. इन्द्रधनुष, 17. तोप, 18. बाण का नाम, 19. तीरदांज, (कन्या)- 1. प्रधानता, 2. नर्मदा, 3. चन्द्रमा, 4. पृथ्वी, न्याय, 5. एक पौराणिक पात्र, बुद्धि, 6. हाथिनी, 7. प्रेमिका, 8. माद हाथी, 9. इच्छा, 10. संकेत, 11. सादृश्य उक्ति, 12. कूंची, तूलिका, 13. तरकश, 14. रात, 15. गन्ना, 16. पृथ्वी, 17. बाण, 18. बाण, 19. पृथ्वी, 20. तापस तरु, मालकांगनी वृक्ष, 21. एक वनस्पति, 22. धड़कन, 23. कामना, 24. परिमिति, सीमा, 25. आनन्द-मंगल, 26. पृथ्वी, 27. विनती, 28. इडा नाम की नाड़ी, 29. बाइबिल, 30. रातमूली, 31. चन्द्रमा की कला, 32. पूर्णिमा, 33. एक वनौषधि, 34. केतकी, 35. एक लता, 36. इबारत, 37. एक पौधा, 38. पूजा, 39. सारुप्य, 40. एक पौराणिक नदी, 41. तारों का समूह, 42. शिक्षा, 43. एक पौधा, 44. रावी नदी, दुर्गा, 45. बलवती, इच्छा, ई- (पुत्र) 1. जीजस, 2. देव रुधिर (ग्रीक पुराण), 3. अल्प, किंचित, 4. शासक, स्वामी, शिव, सूर्य, (कन्या)- 1. चेतना, 2. सींक, 3. इच्छा, 4. गणेश, 5. हल की दंडिका, लाठी, 6. शक्ति, दुर्गा, 7. आँख, 8. महत्व, शित की आठ सिद्धियों में एक, 9. दृष्टि, 10. क्षिप्रता, उ- (पुत्र)- 1. आरंभ, 2. उड़ीसा, 3. लक्ष्य, 4. जवाब, एक दिशा, 5. फूटकर, बहता, 6. उत्तरी, 7. पड़ोस, 8. बादल, समुद्र, 9. त्यौहार, समारोह, 10. कमल, 11. आग, 12. चिंगारी, 13. उपजाऊ, फलित, 14. अनमना, 15. वक्ष, सीता, 16. पौस, श्रेष्ठ, 17. उड़ान, 18. उमड़न, 19. स्थितचित, 20. मन में विचलन, 21. तीव्र, 22. दीवाना, 23. नायक, 24. स्वीकृत, 25. आभूषण, 26. मिलन, 27. उदाहरण, 28. उठा, खड़ा, 29. बलिदान, 30. वस्त्र, चादर, 31. धनी, महाजन, 32. कमल, 33. बुद्धि, 34. प्रकाश, 35. फूल का खिलना, 36. प्राप्त, उपस्थिति, 37. रुद्र, 38. कटाक्ष, 39. घोषणा, 40. प्रकाश, 41. उन्नति, 42. मंद स्वर में की गई प्रार्थना, (कन्या)- 1. अभ्युदय, 2. गर्मी, 3. उत्तर दिशा, 4. अतप, 5. अग्नि की पहली जिव्हा, 6. चिंगारी, 7. ताप, 8. डॉलफिन, 9. टिटहरी, 10. आवेग, 11. राजमहल, हवेली, 12. दीप्ति, 13. शाम की लाली, 14. आंतरिक ज्ञान, 15. सादृश्य, 16. एक अलंकार, 17. डोरी, 18. आकाशवाणी, 19. खिताब, 20. बाप, 21. कथन, 22. उपाधि, 23. मौजूदगी, 24. पवन, 25. उच्च दिशा, 26. एकनाम, 27. आगामी कल, 28. माप, 29. अनुमान, 30. सच्चरित्र, 31. नरेश मेहता के एक कविता संग्रह का शीर्षक, 32. सीता, 33. पूजा, 34. श्रेष्ठ, 35. कमलों का समूह, 36. अनुमान, 37. जयन्त, आमोदरत, 38. ज्योतिमेंय, 39. संपुट, 40. प्यास, 41. पूर्वाद्रि, 42. शास्त्रों में पूर्ण शिक्षित कथि, आवाघात, 43. उत्तर दिशा, 44. एक नक्षत्र, अभिमन्यु की पत्नी, 45. सामवेद के मंत्रों का गायन, 46. चेष्टा, 47. उत्कर्ष, 48. नाप,तोल,मूल्य, 49. अनुग्रह, आथार, 50. उपहार, 51. पद, उपनाम, प्रयोजन, 52.भूमि, 53. मशाल, 54, पृथ्वी, मैदान, 55. समरुपता, 56. पूजा, 57. गर्मी, ऊ- (कन्या)- 1. पृथ्वी, 2. धारा, 3. गर्मी, 4. आतप, 5. शक्ति, 6. सीता, 7. सिकुड़न, सिलवट, 8. अलि, 9. काली मिर्च, अदरक, 10. एक प्रकार की नात, 11. रात, पुत्र- 1. एनर्जी इमीशन, 2. शक्तिमान, 3. चार्जिंग, 4. चार्ज्ड, 5. भेड़, 6. बलिष्ठ, 7. ऊंचा शक्ति, 8. दूध, 9. ग्रीष्म काल

लक्ष्मी बनाम सरस्वती

लक्ष्मी और सरस्वती दोनों सर्वथा एक दूसरे की पूरक, एक दूसरे से विपरीत और भिन्न। एक का स्वभाव अति चंचल। आज एक के पास है तो कल दूसरे के पास इसीलिए वह चंचला कहलाई। इसके विपरीत विद्या का स्वरुप स्थिर रहता है। जिस व्यक्ति के पास विद्या के रुप में सरस्वती आई जीवन पर्यन्त उसी के पास रहती हैं। दान स्वरुप दूसरे के पास पहुंच कर उसका भी उद्धार कर देती है। लक्ष्मी एक से दूसरे के पास पहुंच कर आपस में बैर बढ़ा दे तो कोई बड़ी बात नहीं। इसीलिए लक्ष्मी और विद्या में बैर होता है ऐसा माना जाता है। कुछ लोगों का मत है कि जहां लक्ष्मी का वास है वहां सरस्वती नहीं रहती। इतिहास के पन्नों से पता चलता है कि जिस राजा के पास अथाह खजाना होता था- वह बुद्धि से नहीं बल से अर्जित किया हुआ होता था। जहां बुद्धि का प्रयोग किया वहां राजा मात खा जाता है। राजा बुद्धि के लिए बीरबल या विदुर जैसे सलाहकारों की मदद लेता था। द्युत क्रीड़ा में शकुनी मामा के बुद्धि स्वरुप आते ही पाण्डवों का हारना और महाभारत युद्ध इसी का परिणाम है।

अतः विद्या जहां दुखों को दूर करती है। वहां लक्ष्मी दुःख का कारण बनती है। सम्पत्ति के लिए परिवारों में दुश्मनी होना सर्वविदित है। नीच-कुल में जन्म लेकर व्यास (दासि पुत्र) या गुरु वशिष्ठ (उर्वशी गणिका पुत्र) बुद्धि के बल पर पूज्य बन गये। दुर्योधन उच्च कुल में जन्म लेकर दुर्बुद्धि के कारण त्याज्य का कारण बना।

विद्या का महत्व इससे भी आंका जा सकता है कि परदेस में विद्या मित्र के समान सहायक होती है। विद्या तो कामधेनु के समान छिपा धन है जिसे न तो कोई चुरा सकता है न ही इसका कोई भार होता है। जिसे सहेजने की आवश्यकता पड़े। यह तो कल्पवृक्ष की तरह हमेशा हरी भरी रहती है। दूसरी तरफ लक्ष्मी के साथ हमेशा चोरों का भय रहता है। थोड़ी सी कमी या अधिकता चिंता और तनाव का कारण बनती है।

इन्हीं कारणों की वजह से लक्ष्मी और बुद्धि में हमेशा बैर रहा है। ऐसी पुरानी मान्यता थी लेकिन आज स्थिति बदल गयी है। आज वह सगी बहनों सा व्यवहार करने लगी हैं। आज जहां बुद्धि है वहीं लक्ष्मी का वास है-जो शिक्षित है। जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की है वहीं लाखों से खेलता है। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है। बुद्धि से ही लक्ष्मी अर्जित करता है। अन्ततः लक्ष्मी और बुद्धि के संयोग से वह अपनी पूरी जिंदगी जीता है। दूसरी तरफ निम्न वर्ग जो अनपढ़ गंवार है। बुद्धि के अभाव में पैसे-पैसे का मोहताज है। वह निम्न वर्ग जो शिक्षा का महत्व समझ गया है वह अपनी कोशिश से

उच्च वर्ग के समकक्ष पहुंचने की कोशिश कर रहा है। इसीलिए शायद आज हर संस्थानों में आरक्षण जैसे प्रश्न उठाये जा रहे हैं। आधुनिक काल में धन की कामना सर्वोपरि हो गयी है। धन है तो सब भौतिक सुविधायें जुटाई जा सकती हैं। कई लोगों का लक्ष्य रुपया पैसा कमाना होता है वरन् उस पैसे से उपयोग की सुविधा जुटाना या भावी योजनाओं को मूर्त रुप देना होता है। अगर किसी दूसरे माध्यम से मनोवांछित सुविधाएं मिल जायें तो धन की लालसा शायद स्वतः कम हो जायेगी। इसीलिए धरती पर सभ्यताएं तभी फली-फूली हैं जब धन महत्वपूर्ण नहीं था। अतः धन प्रभुत्वशाली है पर ज्ञान या कला मेधा की तरह प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त है। शायद इसी चंचला को स्थिरता प्रदान करने के लिए दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन का आयोजन किया जाता है।

यह कहा जाए कि बुद्धि के बल पर धन मनुष्य का एक खूबसूरत आविष्कार है तो अतिश्योक्ति नहीं होगा। वह एक आशीर्वाद है। अगर इसका सही ढंग से इस्तेमाल हो तो कई चीजें संभव हो जाती है। धन एक जादुई चीज है लेकिन जहां विचार विवेक बुद्धि की अवहेलना करके बल से लक्ष्मी को काबू करने की भावना आती है वहां लक्ष्मी को चंचला होने में देर नहीं लगती। लक्ष्मी और बुद्धि के सफल संयोग से ही उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। अतः जिन्दगी में सफलता पाने के लिए दोनों की आवश्यकता है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व ही नहीं।

सविता (नीलू दवे)
29 शांति विहार, दिल्ली-92

नागर इन्टर प्राईजेस

दलहन एवं तिलहन (अनाज) के क्रेता एवं विक्रेता

प्रोपा.
एल.एन. नागर
राजेश नागर,
सुरेन्द्र नागर

शादी एवं पार्टी के लिये मारुती वेन एवं अन्य वाहन उपलब्ध है

रेल्वे स्टेशन चौराहा, ए.बी. रोड, शाजापुर, (म.प्र.) फोन 228711 मो. 9424000477, 9425034721, 9893800501

धारावाहिक/सांईबाबा के परम भक्त काका साहेब

सांई बाबा ने काका की जीवन भर की दौलत गरीबों को बांट दी

दीक्षित की बाबा के प्रति ज्यों-ज्यों श्रद्धा बढ़ती गई, त्यों-त्यों उनमें वैराग्य की भावना प्रबल होती गई। बाबा ने उपदेश व उदाहरण देकर दीक्षित के मन में सांसारिक विषय-वासनाओं के प्रति मोह को समाप्त कर दिया। बाबा ने आज अपने भक्तों को यह अहसास करा दिया है कि साधक के लिए अधिक सांसारिक वस्तुओं की जरुरत नहीं होती क्योंकि उसका सारा बोझ तो बाबा स्वयं उठाते हैं और आवश्यक चीजों की पूर्ति समय अनुसार वे स्वयं करते हैं।

एक बार दीक्षित ने चांदी के रुपयों से भरा एक ट्रंक (जो कि उन्होंने कमाया था) बाबा के चरणों में लाकर रख दिया।

दीक्षितः बाबा यह सब आपका है।

बाबाः क्या यह सच है?

बाबा ने ढक्कन खोल, दोनों हाथों से सारे रुपये निकालकर गरीबों में बांट दिए। कुछ ही क्षणों में ट्रंक खाली हो गया। नागपुर के सब जज श्री गर्दे (दीक्षित के मित्र) दीक्षित के चेहरे की ओर देखने लगे। अपनी गाढ़ी मेहनत की कमाई के क्षण भर में चले जाने के बावजूद भी दीक्षित के चेहरे पर किसी प्रकार के दुःख और पश्चाताप का भाव नहीं था। इस प्रकार धन बांटकर बाबा ने दीक्षित की परीक्षा भी ली व उनकी वैराग्य की भावना को सशक्त भी किया।

श्रीमदभागवद्‌गीता के अनुसार
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः।।

अर्थात् जिसका अन्तः करण ज्ञान-विज्ञान से तृप्त है, कूट की तरह निर्विकार है, जितेन्द्रिय है और मिट्टी के ढेले, पत्थर तथा स्वर्ण में समबुद्धि वाला है-ऐसा योगी युक्त (योगारुढ़) कहा जाता है। ज्ञानी मनुष्य धन के आने-जाने व किसी कार्य के बनने-बिगड़ने से हर्ष व शोक नहीं करते। वास्तविक बोध हो जाने पर प्रकृति से सम्बंध-विच्छेद हो जाता है। तब उनके अन्तःकरण में इन भौतिक पदार्थों का कुछ भी मूल्य नहीं रहता अर्थात् बढ़िया-घटिया सब पदार्थों में उनका समभाव हो जाता है। दीक्षित के गाय खरीद कर लाने पर बाबा ने कहा, पहले यह गाय जालना के व्यक्ति की थी उससे पहले यह औरंगाबाद के व्यक्ति की थी और उससे पहले यह म्हालसापति की थी। ईश्वर ही जाने कि यह किसकी सम्पत्ति है? बाबा के यह शब्द ईशावास्य उपनिषद के नीचे दिए श्लोक के अर्थ से मेल खाते हैं:

ईशावस्यम् इदम् सर्वम्
यत्किञ्च जगत्यम् जगत्
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाह
मा गृद्धाः कस्यश्विद् धनम् ।

अर्थात संसार की हर वस्तु पर ईश्वर स्वयं छाए हुए हैं। यह सत्य मन में बिठा लो और सदैव प्रसन्न रहो। यह धन-संपत्ति किस की है? यह सोच कर दुःखी मत हो। यह धन मेरा है, तुम्हारा है या उसका यह सोच कर दुःखी मत हो। संपत्ति तो सदैव एक हाथ से दूसरे हाथ में जाती रहती है और हमेशा अपनी आकृति बदल देती है। आत्मा को सुखी रखने के लिए हमें इससे (संपत्ति) दूर रहना चाहिए। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि सांसारिक पदार्थ सुख-दुख देने वाले और आने-जाने वाले हैं। यह सदा रहने वाले नहीं है, क्योंकि ये अनित्य हैं, क्षणभंगुर हैं। इनके प्राप्त होने पर उसी क्षण इनका नष्ट होना शुरु हो जाता है। इनका संयोग होते ही, इनसे वियोग होना शुरु हो जाता है। ये पहले नहीं थे, पीछे नहीं रहेंगे और वर्तमान में भी प्रतिक्षण अभाव में जा रहे हैं। सुख-दुख के भोगी बनते जा रहे हैं। इनको भोगकर हम केवल अपना स्वभाव बिगाड़ते जा रहे हैं सुख-दुख के भोगी बनते जा रहे हैं। सुख-दुख के भोगी बनकर हम भोग योनि के ही पात्र बनते जा रहे हैं। फिर हमें मुक्ति कैसे मिलेगी? हमें भुक्ति (यानि भोग) की ही रुचि है, तो फिर भगवान हमें मुक्ति कैसे देंगे? अगर हम सुख-दुःख से ऊंचे उठ कर बाबा के श्री चरणों पर ध्यान लगा उनके बताए रास्ते पर चलेंगे तो महान आनन्द का अनुभव कर लेंगे। बाबा ने दीक्षित, खापर्डे व कुछ अन्य भक्तों से कहा था, 'मेरे होते हुए तुम्हें चिन्ता करने की जरुरत नहीं है। तुम कहीं भी रहो, तुम कुछ भी करो, सदैव याद रखो कि तुम जो कुछ भी करते हो, कहते हो, मुझे यह सभी विदित होता है।

-श्रीमती शारदा मंडलोई

नवरात्री की शुभकामनाओं के साथ
हम शॉपिंग के लिये आमंत्रित करते है
इन्दौर एवं प्रदेशवासियों को
हेलोबेबी शॉप फेमेली क्लब
नवजात शिशु से नये-नये मम्मी-पापा तक
विशेषः गर्भवती महिलाओं के लिए गारमेंट और अंडरगारमेंट

न्यूबॉर्न शॉपीः बेसमेंट
बेबी वियर्स, बेबी राइड्स, स्वींग्स् (झुले), बेबी कॉट्स, स्ट्रालर्स, प्रॅम्स, वॉकर्स, फिडर्स, विप्पल्स, टिथर्स, रेटल्स, सुदर्स, ट्रेनिंग कप्स, बेबी कॉस्मेटिक्स, डायपर्स, रिकॉर्ड बुक्स आदि

किड्स शॉपीः ग्राउंड फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, टॉयज, साफ्ट टॉयज, डॉल्स, गेम्स, बुक्स, सीडीज एवं डीवीडीज आदि

टीनएजर्स शॉपी : 1st फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, बेग्स एंड पर्सेस आदि

मेन्स एंड वुमेन्स शॉपी : 2nd फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, कॉस्मेटिक्स, इमिटेशन ज्वेलरी, बेग्स एंड पर्सेस, बेड शीट्स एवं कवर्स, टॉवेल्स आदि

रेस्टारेन्ट : 3rd फ्लोर
शीघ्र ही प्रारंभ

स्थान- हेलोबेबी हाउस, कोठारी मार्केट चौराहा, एम.जी. रोड़, इन्दौर फोन 2531107

दिल और दिमाग को प्रदूषण से बचाएं

आज प्रदूषण बहुत बड़ी समस्या है और इससे सभी परेशान हैं। प्रदूषण का शिकंजा हमारे चारों तरफ मकड़ी के जाले की तरह फैला हुआ है। हर वस्तु की शुद्धता संदिग्ध हो रही है। फल, सब्जी, दूध, घी, पानी और दवाइयों में भी किसी न किसी रुप में नुकसानदायक तत्व मिलाने से लोग बाज नहीं आते हैं। आज हम बाहरी प्रदूषणों के प्रति सचेत रहना सीख गए हैं, पर अंतर्मन में होने वाले प्रदूषणों से अभी बेखबर हैं। जागते तब हैं जब पानी सिर से ऊपर निकलने लगता है। मन, दिल और दिमाग भी दूषित हो सकते हैं, इस तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता है। अधिकतर लोग वही काम करते हैं, जो उन्हें अच्छे लगते हैं। वे सोचने की कोशिश भी नहीं करते हैं, उनके संपर्क में आने वालों पर कैसा प्रभाव होगा।

आगे जाकर उनके सोच, उनके कार्यों का प्रभाव परिवार, समाज और देश पर क्या पड़ेगा। कई बार ऐसे अप्रिय अवसर आ जाते हैं, जब उसकी किन्हीं आदतों के कारण उसके माता-पिता, पति-पत्नी बच्चों या भाई-बहन को नुकसान भी हो सकता है। वह अपनी बुरी आदतों के बचाव में सारे तर्क-कुतर्क खड़े कर लेता है। कुछ तो अपनी वाली पर उतर आते हैं और यहां तक कह देते हैं कि लोगों को खुश करने के लिए वे अपनी आदते नहीं बदल सकते। अपनी जिन्दगी वे अपनी मर्जी अपने ढंग से जीना चाहते हैं। एक बात तो बिलकुल तय है कि जिस तरह व्यक्ति अपनी और घर की साफ-सफाई और साज-सज्जा के प्रति सचेत रहता है उस सजगता से अपने मन-मस्तिष्क और हृदय की सफाई के प्रति सगज नहीं रहता। ऑफिस में यदि उसकी टेबल, कुर्सी साफ नहीं मिलती है तो वह आसमान सिर पर उठा लेता है और जब तक चपरासी उसे साफ नहीं कर देता, वह कुर्सी पर नहीं बैठता। वह गंदगी बर्दाश्त नहीं कर सकता। उसे अपने आसपास, घर-बाहर, दफ्तर सब जगह साफ सुथरा माहौल ही चाहिए। अगर उसके शर्ट या पेंट पर चाय-कॉफी का दाग लग गया हो, पत्नी की लाख कोशिश के बावजूद पूरी तरह साफ नहीं हुआ हो तो, पति महाशय का पारा सातवें आसमान पर पहुंचने में कितनी देर लगती है? मोटर सायकल या कार का गियर अटक रहा हो या धुंआ अधिक निकल रहा हो तो जब तक ठीक न करवा लें, चैन नहीं आता। पर क्या आदमी अपने हृदय की शुचिता के प्रति इतना ही सचेत रहता है? दिमाग में कचरा या गंदगी आ जाए तो तत्काल हटाने की तत्परता क्यों नहीं दिखाता? मन के विकारों को नजर अंदाज क्यों कर देता है? हममें से अधिकतर तो इस बात को भी मानने के लिए तैयार नहीं होते कि उनके दिल में कोई मलीनता और दिमाग में कोई फितूर इकट्ठा होता है। उबलते हुए पानी में जिस प्रकार व्यक्ति अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकता, उसी प्रकार मनोविकारों से ग्रस्त रहकर वह नहीं समझ पाता कि उसकी वास्तविक भलाई किसमें है। अहंकार और ईर्ष्या द्वेष की मलीनता, काम-क्रोध, लोभ लालच का विकार व्यक्ति के दिल और दिमाग को हमेशा जकड़ कर रखता है। कई बार वह नुकसान उठाता है पर फिर आदतन उसी राह चल पड़ता है। यदि व्यक्ति अपने दिल और दिमाग से ऐसे भावों को, विचारों को हटाता रहे, अपने मन को परिमार्जित करता रहे, विकारों को दूर करता रहे तो नकारात्मक स्थितियों से बचने में बड़ी सहायता मिलती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कुरुप चेहरा होना बुरा नहीं है पर कुरुप मन होना खतरनाक है। ऐसी अनेक परिस्थितियां है जब व्यक्ति अपने दिल और दिमाग को विचारों और भावनाओं के भंवर में बहने से बचा ले तो वह तलाक, लड़ाई-झगड़े, वैमनस्य, लूट-पाट, भ्रष्टाचार, घोटालों, आतंक, बेरोजगारी और मन मुटाव तथा आनन-फानन में लखपति, करोड़पति बनने की लिप्सा और अनेक दूसरे सामाजिक पारिवारिक विघटन से अपने को बचा सकता है। घर में यदि गंदगी है, कहीं से बदबू के झोंके आ रहे हों तो उस पर इत्र या परफ्यूम छिड़कने से काम नहीं चलेगा। गंदगी को हटाने से, बदबू के कारण को दूर करने से ही घर का वातावरण स्वच्छ रह सकता है। उसी तरह अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, स्वार्थ, क्रोध आदि विकारों से मुक्त होने के बाद ही व्यक्ति के मन, दिल और दिमाग उचित तरीके से काम कर पाने लायक हो सकते हैं। जिस तरह स्वाति की एक बूंद सर्प के मूंह में पड़कर विष बन जाती है, उसी तरह अच्छी बातें भी मनोविकारों के कचरे और गंदगी में जाकर अपना प्रभाव खो देती हैं। जिस तरह पानी में लोहा नहीं तैर सकता उसी तरह विकारग्रस्त हृदय को सद्विचार भी कोई दिशा नहीं दे पाते। अच्छे विचारों के महत्व को किसी भी युग में और कैसी भी परिस्थिति में नकारना मुश्किल होता है। चोर, डाकू और आतंकवादी जैसे असामाजिक व्यक्ति भी अपने गिरोह में सच्चाई, ईमानदारी और वफादारी का कड़ाई से पालन करते हैं। आश्चर्य तभी होता है जब एक सामान्य व्यक्ति कुविचारों से विकारग्रस्त होकर अपने जीवन को कठिन और उलझन पूर्ण बना लेता है और भ्रम में पड़ा अपने जीवन की गुत्थियों को सुलझा नहीं पाता।

-आशा नागर

सी-12/9, ऋषि नगर, उज्जैन (म.प्र.)

मीठी बोली

बस में जिससे हो जाते हैं प्राणी सारे
जन जिससे बन जाते हैं आंखों के तारे।
पत्थर को पिघला कर मोम बनाने वाली
मुख खोलो तो मीठी बोली बोलो प्यारे।।
रगड़ों-झगड़ों का कड़वापन खोने वाली
जी में लगी हुई काई को धोने वाली।
सदा जोड़ देने वाली जो टूटा नाता
मीठी बोली है बीज प्यार के बोने वाली।।
कांटों में भी सुन्दर फूल खिलाने वाली
रखने वाली कितने ही मुखड़ों की लाली।
निपट बना देने वाली है बिगड़ी बातें
होती मीठी बोली की करतूत निराली।।
जी उमगाने वाली चाह बढ़ाने वाली
दिल के पेचीदे ताले की सच्ची ताली।
फैलाने वाली सुगन्ध सब और अनूठी
मीठी बोली है विकसित फूलों की डाली।।

कथन नागर (आशु)

251, श्री मंगल नगर, इन्दौर

शांत मन में ही अपना सही अक्स दिखता है

देखो, इस पर हर व्यक्ति को गंभीरता से विचार करना चाहिए कि हमारे यहां वैदिक चर्चाओं में सर्वत्र शांति का आग्रह क्यों है? क्योंकि शांति एक दीप है इस कोलाहल भरे विश्व में प्रकाश का। शांत स्थिर झील में हम अपना प्रतिबिंब देख सकते हैं। अस्थिर और अशांत झील में लहरें उत्पन्न होने पर फिर उसमें कोई अपना प्रतिबिंब नहीं देख सकता। प्रतिबिंब देखने के लिए झील के शांत होने का इंतजार करना ही पड़ेगा।

भगवान बुद्ध के परम शिष्य आनन्द ने एक बार उनसे यह प्रश्न किया कि भंते, ज्ञान का पथ इतना कठिन क्यों है? दुखी संसार ज्ञान को ग्रहण क्यों नहीं कर पाता? कुछ क्षण बुद्ध मौन रहे, फिर आनन्द से कहा, जाओ, सामने के सोते में से थोड़ा निर्मल जल ले आओ। आनन्द गया, पर थोड़ी देर में खाली हाथ वापस लौट आया। बुद्ध ने रिक्त पात्र लिए लौटने का कारण पूछा तो आनन्द ने कहा, भंते, अभी एक बैलगाड़ी उस सोते पर से होकर गुजरी थी, इसलिए पानी में कीचड़ घुल गया था। स्वच्छ जल अभी नहीं मिल पाएगा।

थोड़ी देर बाद बुद्ध ने फिर आनन्द को जल लाने का आदेश दिया। अब कीचड़ नीचे बैठ चुका था, अतः आनन्द उपर से स्वच्छ जल लेकर लौट आया। बुद्ध ने समझाया, देखो आनंद, जब नाले में से गाड़ी गुजरी थी, तब हलचल के कारण जल में कीचड़ मिल गया था। थोड़ी देर बाद जब जल में स्थिरता आई, तब कीचड़ बैठ गया और स्वच्छ जल उपलब्ध हो गया। बुद्ध ने सार रुप में समझाया। यही स्थिति मानव मन की है, जब मन की वृत्तियां विषयों के कीचड़ में लिप्त रहती हैं, तब मन अस्थिर और अशांत रहता है।

उस समय उसमें आत्मज्ञान का प्रतिबिंब नहीं उभर पाता, किन्तु जब इन विषयों से मन को मुक्त कर दिया जाता है, तब वृत्तियां स्थिर हो जाती है और शांति के उन क्षणों में ही ज्ञान का आलोक प्राप्त हो पाता है। अपने सामान्य जीवन में हमने शांति के प्रति कुछ विचित्र तर्क गढ़ लिए हैं। जैसे, हम सदैव शांत ही रहते है, जब तक कि कोई व्यक्ति या परिस्थिति हमें अशांत न कर दे। शांति हमारा स्वभाव ही है, परन्तु इस व्यावहारिक जगत में अशांत हुए बिना काम कैसे चल सकता है।

यदि कोई कार चालक सड़क पर कार चलाते हुए हर कदम पर दूसरे वाहन चालकों से झगड़ता रहे कि तुम गाड़ी ठीक से क्यों नहीं चला रहे हो, मैं काफी देर से साइड मांग रहा हूं, तुम हॉर्न नहीं सुन रहे हो, तो क्या वह कभी सही समय पर अपने गंतव्य तक पहुंच पाएगा ?

यदि कार चालक पैदल यात्रियों पर क्रुद्ध होता रहे और हर दस-बीस कदम के बाद कार रोक कर उनसे गलत लेन में चलने के लिए भिड़ जाए, तब क्या कोई मोटर मालिक उसके इस व्यवहार को सह पाएगा? क्या उसका यह तर्क स्वीकार किया जाएगा कि सड़क पर मूर्ख लोग चलते हैं, पैदल यात्री ठीक से सड़क पार नहीं करते, लोग सड़क के नियमों को नहीं जानते, इसलिए उसे क्रोध आएगा ही, कार को धीमे चलाना उसकी विवशता है, वह इसमें क्या कर सकता है? तब मोटर मालिक यही कहेगा कि भाई, सड़क पर वाहन और यात्री इसी तरह चलते हैं और चलते रहेंगे।

तुम्हारे लिए व्यवस्थाएं बदल नहीं जाएंगी। तुम अयोग्य और झगड़ालू हो। जाओ, हम दूसरे चालक का प्रबंध कर लेंगे। इस संसार का यही नियम है। यहां तो चारों तरफ कोलाहल बना ही रहेगा। व्यवहार जगत में मानव मन दंभ ग्रस्त होगा ही, द्वेष अथवा चिड़चिड़ेपन का जन्म होगा ही। हमें ऐसे ही संसार में अपनी यात्रा पूरी करनी होगी। शांति इन स्थितियों को बदलने की शर्त नहीं है, बल्कि वह एक कवच है, इन स्थितियों में सकुशल यात्रा करने का।

स्मरण रहे, संसार यथावत चलता रहेगा, स्थितियां यथावत बनी रहेंगी, क्योंकि त्रिगुणात्मक प्रकृति से निर्मित मानव मन, अपूर्णता से पूर्णता को अचानक कभी नहीं प्राप्त हो जाता।

संकलन-प्रबल शर्मा

हवा बिजली से मिलती रहे

पथ सारे पथरा गये
पेड़ों पर नहीं पात
छाया हीन प्रकाश है
मुक्त कलरव है तात
मूल वृक्ष को काट कर
वृक्ष प्लास्टिक के लगा दिये
बदला श्वास लेने का क्रम
रोशन दीपक जलवा दिये
उन्नति सौपान यों सजे
फुहारें शीतला हो गई
विद्युत छटा के मान से
प्राकृत वायु दुखी हुई
वृक्षों के कटने से कुंठित
वायु प्रदुषण बढ़ा रहा
पर्यावरण शीथिल हो कर
कर्तव्य को नहीं निभा रहा
वृक्ष कट लुप्त हो जायेंगे
तब चलेगा फोटो से काम
हवा बिजली से मिलती रहे
श्वास प्रश्वास को हो विराम
टहनियों पर बसने वाले
कैसे बसेंगे केनवास पर
वे भी चित्रित चकित हो
लुट जायेंगे जमीन पर
पौधे लगाना भूलकर
काट रहे हो दिन रात
कैसा प्रतिनिधित्व है (कैसा मिथक विकास का)
हाथ काटते निज पाद

व्रजेन्द्र नागर, इन्दौर

कार्य में मनोयोग लगाने से वह आनंददायक बनता है

भगवान बुद्ध से एक बार श्रेष्ठि सुमंतक ने पूछा- 'भंते, अक्षय आनन्द की प्रगति का क्या उपाय है? इस पर तथागत ने उत्तर दिया- 'इच्छाओं का त्याग करना' प्रसंग को अधिक स्पष्ट कराने के लिए जिज्ञासु ने पूछा- बिना इच्छा के कोई कर्म नहीं हो सकता, फिर इच्छा न रहने से तो निष्क्रियता छा जाएगी और निर्वाह तक कठिन हो जाएगा।

भगवान ने विस्तार से बताया कि इच्छा त्याग से तात्पर्य बुद्धि एवं कर्म का परित्याग नहीं, वरन व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को छोड़कर आदर्शों के लिए काम करना है। शरीर रक्षा, परिवार पोषण एवं सामाजिक सुख-शांति का ऊंचा उद्देश्य रखकर जो काम किए जाएंगे उनमें स्वार्थांधता नहीं रहेगी, न उनके लिए दुष्कर्म करने पड़ेंगे। सामर्थ्य भर प्रयत्न करने पर जितनी सफलता मिलेगी, उसमें संतोष रखते हुए आगे का प्रयास जारी रखा जाएगा। यही है इच्छाओं का त्याग। जिनमें किन्हीं आदर्शों का समावेश नहीं होता-लोभ और मोह की पूर्ति ही जिनका आधार होता है वे ही हेय और त्याज्य मानी गई हैं।

ईमानदारी के साथ सुदउद्देश्य लेकर मनोयोगपूर्वक श्रम किया जाए, यह कर्तव्य है कर्तव्य-कर्म करने के उपरांत जो प्रतिफल सामने आए उससे जो आनन्द मिले वही संतोष है। संतोष का यह अर्थ नहीं है कि जो है उसी को पर्याप्त मान लिया जाए, अधिक प्रगति एवं सफलता के लिए प्रयत्न ही न किया जाए। ऐसा संतोष तो अकर्मण्यता का पर्यायवाचक हो जाएगा। इससे तो व्यक्ति दरिद्र रहेगा और समाज में पिछड़ापन छाया रहेगा। पुरुषार्थ भरे उपार्जन से व्यक्ति की प्रतिभा निखरती है और समाज की समृद्धि बढ़ती है। किसी दार्शनिक के अनुसार- संतोष निर्धनों का निजी बैंक है जिसमें पर्याप्त धन भर रहता है। इसी प्रकार असंतोषी कभी अमीर नहीं हो सकता और संतोषी के पास दरिद्रता फटक नहीं सकती। उदार और दूरदर्शी मस्तिष्कों में संतोष का वैभव प्रचुर मात्रा में भरा रहता है। आनन्द की तलाश करने वालों को उसकी उपलब्धि संतोष के अतिरिक्त और किसी वस्तु या परिस्थिति में हो ही नहीं सकती। संतोष ईश्वर प्रदत्त संपदा है और तृष्णा अज्ञान के असुर द्वारा थोपी गई निर्धनता। परिणाम को आनन्द का केन्द्र न मानकर यदि काम को उत्कृष्टता की प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाया जाए और उसका स्तर ऊंचा रखने में प्रयत्न किया जाए तो सदा उत्साह बना रहेगा और साथ ही आनन्द भी। शर्त बस एक ही है कि हम किसी काम को छोटा न माने वरन जो भी काम हाथ में है, उसे इतने मनोयोग के साथ पूरा करें कि उसमें कर्ता का व्यक्तित्व बोलने लगे। ऐसे कार्य अपने कर्ता के लिए श्रेय और सम्मान का कारण बनते हैं भले ही वे अधिक महत्वपूर्ण न हों। कहने का तात्पर्य है कि काम के साथ अपने को तब तक रगड़ा जाए जब तक कि वह संतोष की सुगंध न बिखेरने लगे। अतः स्पष्ट है कि हम जिस काम में जितना रस लेते हैं और मनोयोग लगाते हैं वह उतना ही अधिक आनन्ददायक बन जाता है।

संकलन- दुर्गा शर्मा

साधनों की लालसा के बजाय 'साधना' में जुट जाओ

'अनमोल वचन'

1. पृथ्वी पर जितने प्राणी जन्म लेते हैं उनका समाज के प्रति कुछ उत्तरदायित्व होता है, मनुष्य योनि में जन्म लेने वाले प्रत्येक इंसान का सबसे बड़ा धर्म है कि वह सर्व प्रथम मानवता की सेवा करे तथा अपने प्रयत्नों से दूसरों के दुख दर्द दूर करने का प्रयत्न करे।

2. जो वास्तव में शांती का इच्छुक है वह मान सम्मान, पूजा प्रतिष्ठा यश कीर्ति जैसी भ्रांतियों में नहीं भटकता न ही वह स्वार्थ की दीवारों में कैद होता है।

3. यदि वास्तव में हमें शांती तथा शाश्वत सुख की अभिलाषा है, तो हमें साधनों की सघनता के लिए नहीं साधना हेतु सजगता से प्रयासरत रहना होगा।

4. उत्तम सुखों की प्राप्ती धर्म से ही होती है। धर्म कोई भयानक नहीं होता उत्तम जीवन जीने की शैली है प्रत्येक क्षेत्र में कर्तव्य निभाना ही धर्म है।

5. निराशा हमारे सामर्थ्य को कम करती है उर्जा शक्ति का क्षय करती है। निराशा जब भी आएगी भ्रमित करेगी। तथा इसका पहला प्रहार बुद्धि पर होता है।

6. सत्य के बिना स्थायी शांती व संतोष नहीं मिलता। सभी धर्म निरंतर सत्य मार्ग पर चलने परस्पर प्रेम करने व जीवों पर दया की प्रेरणा देते हैं।

7. हर मन एक माणिक्य है, इसे दुखाना किसी भी तरह अच्छा नहीं। यदि तुम इंसानियत पर यकीन करते हो प्रभू पर विश्वास रखते हो तो किसी के दिल को न दुखाओं।

8. शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा नियंत्रित होने पर ही व्यक्ति परम आनन्द की प्राप्ति कर सकता है तथा स्वस्थ रह सकता है।

9. बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी अपने वर्तमान दुखों के कारण रोया नहीं करते अपितु वर्तमान में दुखों के कारणों को रोका करते है।

10. जीवन एक अनगढ़ा पत्थर है उसमें से जो व्यर्थ है उसे हटाना ही साधना है।

संकलन- सुधीर पांड्या,
दिल्ली मो. 09868048080

धरती पर स्वर्ग कहीं है तो केवल नर्मदा तट पर

नर्मदा के कंकर, सब शिवशंकर, अर्थात विश्व में यही एक मात्र अमृतदायीनी नदी है जिसमें प्रत्येक पत्थर लिङ्ग का आकार ले लेता है। शास्त्रों में केवल नर्मदा में जन्मे बाणलिंङ्गों की पूजा ही गृहस्थों के लिये अति फलदायी बताई गई है। इसके प्रत्येक तट पर प्रसिद्ध शिव तीर्थों का निर्माण हुआ है। ओमकारेश्वर, ममलेश्वर ज्योर्तिलिंग, सिद्धनाथ (नेमावर) मण्डलेश्वर बद्रिकानाथ व्यास, अनुसुईयां भ्रमुक्षेत्र आज भी प्रसिद्ध है। हरि,हर, विधि, कुवेर, स्कंध नचिकेत, नारद, वशिष्ठ, व्यास, कश्यप, गौतम, भारद्वाज, मारकण्डेय, पुरुरवा, हिरण्यरेता आदि अगणित देवर्षि, महर्षि एवं राज ऋषियों ने अपने जीवन काल में नर्मदा के तट पर तपस्या के साथ-साथ इनका सेवन भी किया।

नर्मदा क्षेत्र को सम्पूर्ण तंत्रमय शिव क्षेत्र माना गया है। शिव साधको के लिये शिवरहस्य एवं शिव दर्शन प्राप्त करने के लिये नर्मदा तट से बढ़कर विश्व में कोई और दिव्य स्थान नहीं है।

आदि गुरु शंकराचार्यजी ने भी नर्मदा तट पर ही दीक्षा प्राप्त की थी और उन्हीं के शब्दों में नर्मदा का महत्व नीचे वर्णित है।

सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।
सर्व वेदेषु यउज्ञानं तत्सर्व नर्मदा तटे।।

अर्थात सम्पूर्ण तीर्थों में स्नानादि से होने वाला पुण्य तथा समस्त यज्ञो के हो चुकने पर जो फल एवं समस्त वेदाध्यन करने पर जो ज्ञान मिलता है वह सब नर्मदाजी के तट पर विद्यमान है। अर्थात रेवा तट पर निवास करने से भोग एवं मोक्ष दोनों सुलभ हो जाते है।

पूजन योग्य बाणलिङ्ग

नर्मदेश्वर लिङ्ग जानने के लिये ऋषियों ने एक विशेष पद्धति का निर्माण किया है जिसका वर्णन नीचे किया जा रहा है।

सर्व प्रथम नर्मदा से प्राप्तलिङ्ग को एक अच्छे तराजु के द्वारा चावलों से तोल लीजिये। थोड़ी देर बाद उन्हीं चावलों से लिङ्ग को पुनः तौलिये, यदि कुछ चावल लिङ्ग के वजन से बढ़ जावे तो उपरोक्त लिङ्ग गृहस्थ को ऐश्वर्य देने वाला होता है एवं उसके लिये पूज्य है।

यदि कुछ चावल घटते है तो उपरोक्त लिङ्ग साधक के मन में वैराग्य भाव का निर्माण करेगा।

किन्तु शिवलिंग यदि दो या तीन बार तौलने पर भी चावल के वजन का ही है तो ऐसे लिङ्ग का पूजन नहीं करना चाहिये, अर्थात लिङ्ग अभी पूर्ण रुप में स्वरुप में नहीं आया है अतः उसे पवित्र भाव से पुनः नर्मदाजी में विसर्जित कर देना चाहिये।

अत्यन्त काला भौरे के समान शिव लिङ्ग ही पूजा के लिये सर्व श्रेष्ठ होता है। बादल के समान श्याम रंग दुधिया धारी से युक्त, श्वेत रंग का बाण लिङ्ग भी उपयुक्त होता है। कमल गट्टे के बराबर या जामुन के बराबर बाणलिङ्ग को सोने, चांदी तांबे की पीठिका (जलधारी) में स्थापित हो वहीं गृहस्थ के घर में रखकर पूजा के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

शिव पूजन में यदि आह्वान, आचमन स्नान, कुसा समर्पण आदि के मंत्र न आते हो तो सब क्रियाएं पञ्चाक्षर मंत्र 'ऊँ नमः शिवाय' के जप से की जा सकती है। इस मंत्र के जप के लिये दीक्षा, संस्कार अर्पण समय शुद्धि आवश्यक नहीं है, अतः मंत्र सदा पवित्र है।

-संतोष कुमार व्यास
10 बीमा नगर, इन्दौर

जिसने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया
मध्यप्रदेश का प्रमुख समाचार पत्र
दैनिक अवन्तिका
इन्दौर-7, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड फोनः-0731-4085777 मो.-98277-71777
उज्जैन- 2, रानी लक्ष्मीबाई मार्ग फोनः-0734-2554455 फेक्सः-2559777
इन्दौर- 20, जूनी कसेरा बाखल, फोनः-0731-2450018 फेक्सः-2459026

VVV स्मृति दिवस : 1 मार्च : श्री शिवप्रसाद शर्मा VVV

आचरण से शिक्षा देने वाले संत

लाख-पचास हजार श्रोताओं को एकत्रकर ज्ञान, प्रवचन देने वाले कथाकार एवं संत जिस प्रकार पुज्यनीय है उसी प्रकार अपने आचरण से शिक्षा देने वाले महापुरुष भी महान संत है। हमारे बाबूजी श्री शिवप्रसादजी शर्मा ने जीवन पर्यन्त अपने आचरण से यह शिक्षा दी कि ईश्वर अन्तर का मामला है। उन्हें हमने कभी पूजा, भजन करते नहीं देखा, वे मन-ही-मन ईष्ट का नाम जपते थे तथा भविष्य के प्रति उनके मन में गजब का आत्मविश्वास था, कठिन-से-कठिन भी काम हो तो वह कहते थे कि जब योग आएगा हो जाएगा। और हमने देखा भी कि उनके जीवन के सम्पूर्ण कर्तव्य भगवान की कृपा से पूरे होते गए।

भक्त नरसि मेहता ने भजनों के माध्यम से भगवान कृष्ण को रिझाया तथा अपने जीवन के सभी कार्य पूर्ण करते हुए अमर हो गए। उसी प्रकार अपने आचरण के माध्यम से जीवन जीने की शिक्षा बाबूजी दे गए। कोई भी कार्य तभी सम्पन्न होगा जब उसका समय निर्धारित है, हम कितनी भी उठापटक करें, बेचैन रहे उस समय का इंतजार करना ही पड़ता है। जब किसी कार्य का योग आता है तो सारे साधन अपने-आप जुट जाते हैं। अतः मन-ही-मन भगवान के प्रति विश्वास रखते हुए धैर्य रखने की शिक्षा उन्होंने दी। वे अपने परिवार के प्रति सबसे ज्यादा समर्पित रहे। परिवार के सदस्यों की खुशी ही उनके लिए सब कुछ थी, वे जानते थे कि बाकि सारे रिश्ते नाते मात्र स्वार्थ तक सीमित है। मैंने देखा हैं कि भगवान भरोसे उनका जीवन इतना सुखमय बीता कि जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जितने साधन उपलब्ध है उसी में सुख से रहे, कोई हाय-तौबा नहीं की। बड़ा परिवार होने के साथ हम सभी भाई भी उनका हाथ बंटाते थे इसके बावजूद जरुरत से अधिक उन्होंने हमसे अपेक्षा नहीं की। वर्षों की शासकीय नौकरी भी उन्होंने पूरी ईमानदारी से की तथा सम्पूर्ण कार्यकाल बैदाग रहा। सेवा निवृत्ति के पश्चात मधुमेह एवं हृदय रोग के दौरान भी उन्होंने कष्ट को स्वयं सहा। परिवार के एक भी सदस्य को महसूस नहीं होने दिया। पूरा जीवन भगवान भरोसे फक्खडपन से जीया तथा अंतिम घड़ी में जब अस्पताल में थे तो सबसे छोटा भाई मनीष उनके पास था, जब वहां लगी मशीन में हार्टबीट धुंधली होकर सीधी लाईन में चलने लगी तो वे मनीष से बोले देख मशीन में मेरी हार्टबीट सीधी चलने लगी है और वे यही कहते-कहते विदा हो गए। बेहतर जीवन जीने की शिक्षा आचरण के माध्यम से देने वाले हमारे बाबूजी भगवान के भरोसे जितना अच्छा जीवन जिये उनकी मृत्यु भी उतनी ही सरलता से हुई। हमारा पूरा परिवार उन महान संत से यही शिक्षा लेता है कि भगवान भरोसे रहो। मन में भक्ति करो। कोई भी कार्य होने के लिए समय (योग) का इंतजार करो। सबसे पहले अपने परिवार को प्राथमिकता दो। बाबूजी आज हमारे बीच नहीं है किन्तु उनके आचरण एवं आशीर्वाद सदैव हमारे साथ है।

-दीपक शर्मा

We Arrange:-

ECO TOUR CONSULTAN
Excellent Economic Excursion

TOURS	TICKTING	EVENTS
Corporate	Air (domestic & international)	Conferences
Honeymoon	Train (E-ticketing)	Parties
Individual	Bus booking	Shows
Religious	Taxi	Picnic
Educational	And all type of convinces	Cultural activities....

PLEASE CONTACT:- NAVIN NAGAR- 9893163021, SHWETA JHA-9300130848,
ECO TOUR CONSULTANT: 57-58, RNT MARG, CHAWNI CHOURAHA, INDORE

×æ¢ -·¤Ô -·¤Ô¼Ü¤ç¢ß¤×èÂÌeãñ...

भगवान अपना भक्त होण की रक्षा और लालन-पालन का लिए घर-घर नी जई सकता था, इका लिए उनने माँ बनाई। नौ महीना तक कष्ट सेहन करी के माँ बच्चा के जनम दे, उका बाद उके पाले-पोसे, बच्चा की पेली गुरु भी माँ के ही बतायो जाय। कुल मिलई के माँ अपनी संतान से ज्यादा जुड़ी रे, बच्चा के ठोंकर भी लगे तो माँ उके अपना कलेजा में मेहसूस करे। बच्चा की पढ़ई-लिखई, उनको केरियर बनाने का बाद जदे वी नौकरी-धंधा का वास्ते बायर जाय नी तो सबसे ज्यादा दुःख माँ के ज होय, वा आता-जाता का साथे अपना लाडला होण के पसंद की चीज होण भेजती रे, ने मन-ज-मन चिंतित भी रे के कई मालम अपना कलेजा का टुकड़ा को कई हाल है। पिताजी भी अपनी संतान से कम प्यार नी करे पर माँ को कोई विकल्प नी है। वा रात-दिन अपना बच्चा होन की उन्नति ने उनकी सुख-सुविधा का प्रति चिंतित रे। वा जब भगवान की पूजा करे तो अपणा वास्ते कई नी मांगे, के के भगवान म्हारा छोरा-छोरी होण के सुखी रखजो। योज कारण है के बच्चा होण भी अपना तन-मन की बात अपनी माँ से करनो पसंद करे। पालन-पोषण ने केरियर बनाने की जां तक बात है तो माँ कदम-कदम पर अपणा बच्चा होण का वास्ते नरा समझौता करे। छोरी होण जद ब्याव हुई के जाय नी तो माँ के ज सबसे ज्यादा दुख होय, ने छोरा होण बऊ लाए तो माँ के ज ज्यादा समझौता करना पड़े। पेलां की बात अलग थी के बेटा होण माँ का केणा में रेता था तो बऊ होण अटोपई जाती थी अब तो बेटा होण शादी का पेला दिन से ज बऊ का हुई जाय, ऐसा में भी माँ को सोच योज रे के म्हारे कई करनो मैं कितरा दिन की हूं, म्हारो बेटो अपनी बऊ का साथे सुखी रे तो सई है। नरा बेटा होण तो आगे निकली ग्या ने अपना माँ-बाप के वृद्धाश्रम में छोड़ियाया, पर 'माँ' को कई केणो के वाँ भी वा अपना बऊ-बेटा की कुशलता की कामना करती रे। आज का जमाना में जो बेटा होण अपनी पत्नी ने माँ का बीच अच्छो तालमेल बेठई ले, तो समझो ऊ दुनिया को सबसे बड़ो पराक्रमी है। आजकल की बऊ होण संयुक्त परिवार से तो आय नी एकल परिवार से आए तो उनके कोई सुहाय नी। वी चाय के शादी का पेला दिन से ज उनके आजादी मिली जाय, घुमनो-फिरनो, पिक्चर देखनो ने होटल में खानो खाने को सपनो देखती हुई आय, सेवा ने त्याग तो उनकी डिक्शनरी में रे ज नी। 'संघर्ष' शब्द तो उनने सुणयोज नी। पर यो याद रखो के तम यां जो बोव हो नी उज काटनो पड़े। यो प्रकृति को नेम है। सुख-दुख तो धुप-छाय का तरे आता-जाता रे, पर तमारो करम तमारो पीछो कदी नी छोड़े। म्हारो केणो मानो तो अपनो कर्तव्य कदी मत भूलो। माता-पिता के पर्याप्त सम्मान दो उनकी सेवा करो जवानी में मस्ताने से पेलां यो भी सोचो के बुढ़ापो दरवाजा पे दस्तक दई रियो है।

-प्रभा शर्मा

लघु कथा

तीसरा बेटा

घबराई हुई वृद्धा, हृदयाघात से कराहते, पसीने-पसीने होते पति को ऑटोरिक्शा में डाल निजी चिकित्सालय में लाई। स्ट्रेचर पर डालकर जब मरीज को चिकित्सा-कक्ष में लाया गया तो युवा डॉक्टर ने पूछा, मांजी, क्या आपने नर्सिंग होम की सारी औपचारिकताएँ पूरी कर दी? वृद्ध ने निरीह आंखों से डॉक्टर को देखा। उन आंखों में बहुत कुछ था-भय, दुश्चिंता और अनिश्चित भविष्य की आशंका। मेरा मतलब, एडवांस वगैरह जमा कर दिया आप ने? डॉक्टर ने स्पष्ट किया। जैसे ही इन्हें अटैक आया, उठकर यहां चली आई। यकीन मानिए, कल बैंक खुलते ही पैसे जमा करा दूंगी। निजी चिकित्सालयों के पिछले कटु अनुभवों की मारी वृद्धा ने अत्यंत दयनीय स्वर में कहा। क्या आप अकेली हैं? मरीज की गंभीर हालत देख डॉक्टर ने पूछा। दो बेटे हैं, लेकिन दोनों बहुत दूर हैं। खबर करूंगी तब भी पहुंचने में कम से कम चौबीस घंटे लगेंगे। पता नहीं, तब तक क्या होगा। बदहवास वृद्धा की आंखें छलछला आई थीं।

घबराइए मत मांजी, मैं हूं न यहां, आपका तीसरा बेटा। डॉक्टर ने वृद्धा के कंधों को थपथपाते हुए कहा तो बुढ़िया की अश्रुधारा तेज हो गई। रोगी को तो जैसे संजीवनी ही मिल गई।

-सूर्यकांत नागर

अड़सठ तीरथ गुरु माही

(मेरे लाडले गुरुदेव श्री 1008 श्री कमल किशोरजी नागर म.सा. के श्री चरणों में सादर समर्पित)

गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊं
गुरु बिन नुगरा मैं कहलाऊं।
गुरु दर्शन की महिमा भारी
पुलक शरीरा नयनो मैं वारी
चारी पदारथ करतल पाऊं। गुरु बिन....
गुरु चरणन की रज मिल जायें
तो जनम जनम के सब धुल जायें
गुरु पद पंकज शीश नमाऊं। गुरु बिन...
गुरु किरपा का मैं अभिलाषी
ना जाऊं में मथुरा काशी
अड़सठ तीरथ गुरु माही ध्याऊं। गुरु बिन

पं. रमेश रावल
डेलची (माकड़ोन)

दुर्लभ विलासी मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का तीन दिवसीय आयोजन सम्पन्न

बांसवाड़ा। दुर्लभ विलासी मंदिर की पुनः प्राण प्रतिष्ठा वैदिक ऋचाओं के साथ शतचण्डी यज्ञ का कार्यक्रम आचार्य श्री हर्षद शंकर शुभशंकरजी झा ने 13-14-15 फरवरी को श्री ललित किशोरजी श्री धनपतरायजी झा और श्री लालजी जानी के हाथो सम्पन्न कराया मूर्ति पूजन श्री नटवरलालजी झा ने किया महाप्रसादी (जाति भोज) की पूरी व्यवस्था श्री हीतेन्द्र झा ने संभाली इस कार्यक्रम में नागर समाज के सभी परिवारों ने प्राण प्रतिष्ठा में अपनी आहुतिया अर्पित की। पुराने मंदिर में दुर्लभ मल का साहित्य और फोटो लगा हुआ था जिसकी आराधना की जाती थी अब नवनिर्मित मंदिर में तीन खण्ड उनके वागड़ में आने के समय का है भीलुडा ग्राम में जब नागरों ने मंदिर के दरवाजे बंदकर ताला लगाया और प्रभु श्रीराम से ही ताला खुलवाने का आग्रह किया।

भजन हुए, ताला टूटा और दर्शन भी दिये उन्ही भीलुडानाथ की प्रतिमा स्थापित है मध्य खण्ड में राधाकृष्ण की जोड़ी है जिसे अपने साहित्य में दुर्लभरामजी ने स्वयं के दिल में विलास (रहने वाली) करने वाली दुर्लभ-विलासी कहा है तृतीय खण्ड गोपीनाथजी (शंकर-पार्वती) का है जो दुर्लभराम जी द्वारा लिखे और वाचन करते समय राधाकृष्ण की तरह स्वयं उपस्थित होकर उसका आनन्द उठाते थे। भक्त की तस्वीर को राधा कृष्ण के चरणों में ही प्रतिष्ठित की गई है। भक्त अपने साहित्य का सृजन तो स्वातः सुखाय ही करते है परन्तु उसमें लोक कल्याण का समावेश होता है। हमारे समाज में संतवाणी को गुप्त रखने की गलत परम्परा पड़ी हुई है जिसके कारण कितना संत साहित्य हमारी अज्ञानता के कारण समाप्त हो गया। दुर्लभ साहित्य को कुछ लोगो ने अपनी स्मरण शक्ति से उतार लिया और एक दूसरे तक पहुंचाया इसलिये यह जन साहित्य बन सका। अभी भी इस साहित्य को पूजा तक सीमित नहीं रखकर गंगा की तरह बहाते रहने की आवश्यकता है जिससे सभी रसिक भक्त उसमें नहा सके उसमें डूबकी लगा सके। स्वामी परमानन्द सरस्वती ने 'दुर्लभ चरित्र' और डॉ. शंकरलाल त्रिवेदी ने 'दुर्लभ जीवन अने कवन' को गुजरात राज्य साहित्य एकेडमी की सहायता से गुजराती भाषा में प्रकाशित करवाई उसी दुर्लभ वाणी को लोक कल्याण में लगाना चाहिए। दुर्लभ की काव्यसरिता में रसदर्शन करना चाहे तो भीलुडा के पद, अनुभवगीता, सुदामाचरित, नानो रास, मोटोरास, रास नो समो होली अने फाग ना पदो प्रभातिया और वात्सल्य के पद, श्रंगार के पदो का अध्ययन और अध्यापन करना पड़ेगा। नागर समाज का इसी प्रकार सहयोग मिलता रहता तो यह श्रेष्ठ अन्नक्षेत्र भी सिद्ध होगा इसी शुभेच्छा के साथ

मंजु प्रमोदराय झा
सी-20, सुविधी नगर, एरोड्रम रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन 0731-2415602

पलाश के फुल

जब तुम मुझसे मिलने आओ
फूल पलाश का लेते आना
बारह माह में एक बार है खिलता
फागुन का इन्तजार ही करता
होली का त्यौहार कितना प्यारा
गम भुला कर सब मिल जाते
हर रंग में हम रंग जाते
फुल पलाश का कितना प्यारा
एक साल तक अपने प्रीतम का करता इन्तजार
पलाश का रंग निराला
फागुन के त्यौहार जितने प्यारे
तुम मुझसे दूर न हो जाना
दे रज में पलाश में चेहरा तुम्हारा
ऐसा प्यार हमारा तुम्हारा

श्रीमती चारु मित्रा नागर
मो. 9826667059

निशांत नागर स्कॉटलैण्ड प्रवास पर

जयपुर। श्रीमती सुषमा नागर एवं श्री वीरेन्द्र नागर के सुपुत्र निशांत नागर, सॉफ्टवेयर इंजिनियर (एसोसिएट कन्सलटैन्ट, इन्फोसिस टेक्नोलोजीज लि. हैदराबाद) ने दिनांक 31-01-2009 को कम्पनी के विशेष प्रोजेक्ट हेतु स्कॉटलैंड के इडनबर्ग शहर हेतु प्रस्थान किया। इससे पूर्व निशांत नागर कम्पनी के विभिन्न प्रोजेक्टों का सफलतापूर्वक निष्पादन लंदन जाकर दो बार कर चुके हैं। परिवारजन इनकी उपलब्धि पर हर्षित है एवं उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

-श्रीमती सुषमा वीरेन्द्र नागर
मो. 09887423194, 0141-2751011

संकटनाशन गणपति स्तोत्र विघ्न-बाधाओं से मुक्ति के लिए

किसी एक अज्ञात परोपकारी की ओर से डाक द्वारा भेजा गया यह 'संकट-नाशन-गणपति स्तोत्र' पाठकों के उपकार के लिए यहां दिया जा रहा है। व्यापार, विद्यार्जन आदि में विघ्न-बाधाओं से पीड़ित व्यक्ति को छः मास तक प्रतिदिन प्रातः, सायं, हो सके तो मध्यान्ह के समय भी, इस स्तोत्र का कम से कम चार-चार पाठ श्रद्धापूर्वक करने चाहिए। स्त्रोत के जपानुष्ठान के लिए निम्नांकित निर्देशों का पालन करना आवश्यक है

1. पूजा के समय श्री गणेश के साथ-साथ श्री गौरी और श्री शंकर की प्रतिमा या चित्र को भी धूप,दीप,नैवेद्य अर्पित करना चाहिए।

2. प्रतिदिन लड्डुओं का भोग लगाकर उन्हे बच्चों में बांट दे।

3. चूहों को मारे नहीं, और ना ही उन्हें कोई कष्ट पहुचाएं।

4. प्रत्येक मास की कृष्ण चतुर्थी के दिन श्री गणेशचतुर्थी का व्रत विधान पूर्वक करें।

5. इस स्त्रोत की आठ प्रतियां अपने हाथ से सुस्पष्ट लिखकर आठ विद्वान, आस्तिक ब्राह्मणों को अर्पित करें।

स्त्रोत नीचे दिया जा रहा है-

संकटनाशन-गणेशस्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ।।1।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिडागक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।।2।।
लम्बोदरं वज्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टकम् ।।3।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।।4।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघन्भयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ।।5।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ।।6।।
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिमासैःफलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ।।7।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ।।8।।

जपानुष्ठान का प्रारंभ श्री गणेशचतुर्थी व्रत वाले दिन से करके छः मास बाद भी गणेशचतुर्थी व्रत वाले दिन ही इसे पूर्ण करें। तद्नन्तर भी प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ कार्यों को निर्विघ्न बनाएगा।

सफल एवं निष्फल 'दान'

(अ) दानदाता का शुभदान-

1. जो ब्राह्मण कुटुम्ब वाला हो, दरिद्र व क्षत्रीय हो।
2. वेद विद्, स्वकर्म में तत्पर पवित्र ब्राह्मण।
3. दीन, अनाथ, सज्जन।
4. धर्मात्मा तथा गौसेवा करने वाला।
5. व्रत करने वाला, स्वाध्यायी, प्रशान्त।
6. पाप से डरने वाला।
7. अंधा, बहरा रोगी।
8. जो ब्राह्मण कन्या विवाह कराने योग्य हो।
9. समाज की धर्मशाला निर्माण कराने।
10. समाज के उत्थान हेतु दिया दान।
11. समाज के गरीब परिवार को।
12. समाज के गरीब प्रतिभाशाली बालक, बालिकाओं को शिक्षा दानार्थ पुस्तकें।
13. सामाजिक पत्र पत्रिका के प्रचार-प्रसार में।
14. गौशाला, पुस्तकालय में दिया दान, मंदिर निर्माण में।

(ब) दानदाता का निष्फल दान-

1. मूर्ख ब्राह्मण, लोभी, लम्पट, वेदअध्ययन से हीन
2. पाखण्डी, कपटी, निन्दक, ठगी करने वाला।
3. देवनिमित्त अन्न, द्रव्य चोर, स्वार्थी, स्त्री के वश में रहने वाला।
4. वेद, विद्या न पढ़ने वाला अर्थात गलत मंत्रोच्चारक।
5. शराबी, जुआरी, संध्योपासक न हो।

(स) दान महत्व-

दानदाता को धर्मसंचय करना चाहिए इससे यह लोक व उसका परलोक सुखी रहता है। नया पैस धर्म शनैः संचिनुया द्वल्मीक मिव पुस्तिकाः परलोक सहायार्थ सर्वभूतान्य पीडपन

(मनुस्मृति अ. 4)

मूर्ख ब्राह्मण भस्म के समान व विद्वान ब्राह्मण प्रज्वलित अग्नितुल्य है। जो मनुष्य पालन करने योग्य लोगों का पालन नहीं करता किन्तु अपने परलोक की चिन्ता करने वाला स्वहित दान करता है उसे इस लोक में तथा परलोक में दुख उठाना पड़ता है। श्रद्धापूर्वक सुपात्र को दान देना चाहिए-

दातव्यं प्रत्यहं पात्रे निमित्ते तु विशेषतः (याज्ञवल्क्य स्मृति 1'')

अपने भाई बन्धु, सखा, हितैषी को शिक्षा, विवाह, उपचार हेतु जमाई बहिन, भानेज, कन्या को आर्थिक मदद देने वाला दाता इस लोक में सुख भोगता है, उसे ईश्वर कठिनाई में रास्ता दिखाते हैं।

-रुद्रकान्ता रावल
155-ए, तुलसी नगर, इन्दौर
फोन 0731-2553153

ऐतिहासिक महालक्ष्मी मंदिर का स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया

खण्डवा। माताजी के मंदिर हरिगंज में माँ महालक्ष्मीजी की मूर्ति की स्थापना माघ सुदी (शुक्ल) द्वितीय (दूज) संवत 1998 रविवार दिनांक 18 जनवरी 1942 को प्रख्यात वकील श्री दिनकर राव वामन राव मंडलोई ने अपने निवास पर धर्मपत्नि सौ. दुर्गादेवी मंडलोई को शिव कालिका एवं अम्बाजी का ईष्ट होने के फलस्वरुप काशी, नासिक, उज्जैन एवं खंडवा के प्रकांड पंडितों की राय लेने के पश्चात, श्रीमती दुर्गादेवी मंडलोई के कर कमलों से हवन एवं पूजन अर्चन से स्थापित किया। जयपुर से मूर्ति लाकर भव्य चल समारोह के पश्चात उत्सव के रुप में प्रतिस्थापित की गई। तब से प्रतिवर्ष परम्परानुसार उक्त तिथि माघ सुदी दूज को वर्षगांठ के रुप में मनाया जाता है। प्रातः मूर्ति का अभिषेक, पूजन अर्चन एवं सायंकाल सत्यनारायण की कथा एवं आरती पश्चात प्रसाद वितरण कार्यक्रम होता है। समस्त नागर समाज की उपस्थिति रहती है। साथ ही अन्य श्रद्धालु भी भारी संख्या में दर्शन लाभ एवं प्रसाद हेतु उपस्थित होते हैं।

प्रस्तुति- देवीदास पोत्दार अध्यक्ष
श्री हाटकेश्वर नागर मंडल, खंडवा (म.प्र.)

महाशिवरात्रि पर हाटकेश्वर मंदिर में अभिषेक, पूजा-अर्चना

रतलाम। शहर के कालेज रोड स्थित मठ क्षेत्र के हाटकेश्वर मंदिर पर महाशिवरात्रि के पर्व पर नागर समाज द्वारा अभिषेक, पूजा-अर्चना की गई। प्रातः हुए इस धार्मिक आयोजन में श्री योगेश नागर, श्रीमती रेखा नागर तथा श्री विष्णुदत्त नागर, श्रीमति स्नेहलता नागर ने विधिवत मंत्रोच्चार के साथ अभिषेक एवं पूजा की। मठ स्थित हाटकेश्वर मंदिर पर हुए कार्यक्रम में नागर समाज के अध्यक्ष श्री हेमकांत दवे सहित सर्व श्री जमनालाल नागर, रामेश्वर मेहता, कृष्णकांत व्यास, मंगला दवे, विभाष मेहता, ओम त्रिवेदी, रमाकांत नागर, श्रीमती किरण मेहता, संजय मेहता, त्रिलोकेश मेहता सहित बड़ी संख्या में महिला-पुरुषों ने सम्मिलित होकर आयोजन को सफल बनाया। **-ओम त्रिवेदी**

श्री चन्द्रकांत मेहता बने डी.पी.ओ.

रतलाम। रतलाम रेल मंडल में सहायक कार्मिक अधिकारी के पद पर कार्यरत नागर समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री चन्द्रकांत मेहता की गत दिवस मण्डल कार्मिक अधिकारी (डी.पी.ओ.) के पद पर पदोन्नति की गई। श्री मेहता ने रेलवे के विभिन्न विभागों में निष्ठा पूर्वक कार्य करते हुए अपने क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किये है। रतलाम में हुए इस पदांकन पर श्री मेहता को नागर ब्राह्मण समाज के सर्व श्री ओम त्रिवेदी, सतीश नागर, विष्णुदत्त नागर, संजय मेहता, नवनीत मेहता, विभाष मेहता, संजय दवे, धर्मेन्द्र नागर, गिरीश भट्ट आदि ने बधाई प्रेषित की।

हाटकेश्वर मंदिर में फलों के रस से रुद्राभिषेक

झाबुआ से 6 कि.मी. पारा रोड़ पर ग्राम सेमल्या में भगत समाज से श्री कानाजी महाराज द्वारा निर्मित श्री हाटकेश्वर महादेव मन्दिर पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही। प्रातः भगत समाज द्वारा हवन किया गया, दोप. 2 बजे से झाबुआ के श्रद्धालु राजेश नागर महेश नागर (भोले), नारायण प्रसाद एवं राकेश नागर द्वारा वैदिक पं. द्विजेन्द्र व्यास के सानिध्य में, पं. जनार्दन शुक्ल, पं. जैमिनि शुक्ल एवं पं. कपिल जॉनी ने लघु रुद्राभिषेक फलो के रस से किया गया, एवं महादेव का विशेष श्रृंगार किया। जिसका भगत समाज ग्राम सेमल्या के भक्त, झाबुआ नागर समाज और ब्राह्मण समाज एवं अन्य श्रद्धालुओं ने पूजन अर्चना कर, महाप्रसादी का लाभ लिया।

झाबुआ जिले के नागर समाज की फोन निर्देशिका का प्रकाशन

जिले के समस्त समाजजनों के फोन एवं मोबाईल नम्बर का प्रकाशन माह अप्रैल में किया जावेगा, समस्त स्वजातिय बंधुओं से अनुरोध है कि आप अपने फोन एवं मोबाईल नम्बर की जानकारी व अगर आप चाहें तो आपके कार्य व प्रतिष्ठान का विज्ञापन अति शीघ्र जिले की प्रतिनिधि सौ. लीना राजेश नागर भेज देवें।

सम्पादक

मार्च माह के मुख्य व्रत, त्यौहार

दि. 7 आमलकी, रंगभरी एकादशी
दि. 8 गोविन्द द्वादशी, प्रदोष व्रत
दि. 10 पूर्णिमा व्रत होलिका दहन
दि. 11 होली, धुरेड़ी, बंसतोत्सव, स्नानदान पूर्णिमा
दि. 12 भाई दुज, चित्रगुप्त पूजा
दि. 14 गणेश चतुर्थी व्रत
दि. 15 रंग पंचमी
दि. 17 एकनाथ छठ
दि. 19 शीतलाष्टमी, बसोरा
दि. 22 पापमोचनी एकादशी
दि. 24 वारूणी पर्व, हिंगलाज पूजा, प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत
दि. 26 स्नानदान श्राद्ध अमावस्या
दि. 27 चैत्र नवरात्रारम्भ, बैठकी, गुड़ी पड़वा, विक्रम नववर्ष
दि. 28 चेटीचांद, चन्द्रदर्शन, सिंधारा दोज
दि. 29 सौभाग्य सुंदरी, गणगौर तीज
दि. 30 विनायकी चतुर्थी व्रत

चन्द्र स्थिति

मेष का। दि.2 को 1.58 रात से वृष का। दि. 4 को 4.43 रात अंत से मिथुन का। दि. 7 को 7 बजे प्रातः से कर्क का। दि. 9 को 9.40 दिन से सिंह का। दि. 11 को 1.42 दिन से कन्या का। दि. 13 को 7.45 रात से तुला का। दि. 15 को 4.14 रात अंत से वृश्चिक का। दि. 18 को 2.56 दिन से धनु का। दि. 20 को 2.43 रात से मकर का। दि. 23 को 1.50 दिन से कुंभ का। दि. 25 को 10.53 रात से मीन का। दि. 27 को 5.33 रात अंत से मेष का। दि. 30 को 9 बजकर 54 मिनिट दिन से वृष का चन्द्रमा रहेगा।

उदयकालिक लग्न- दि. 1 से 14 तक कुंभ, दि. 15 से मीन।

मार्च माह की मुख्य जयंती, दिवस

दि. 8 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
दि. 11 श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु जयंती
दि. 15 विश्व उपभोक्ता संरक्षण दिवस
दि. 20 रानी अवंतीबाई लोधी बलि. दि.
दि. 21 ओशो सम्बोधि दिवस
दि. 22 माँ कर्मा देवी जयंती, राष्ट्रीय शक संवत् 1931 प्रारंभ
दि. 23 सुखदेव, राजगुरु शहीद दिवस
दि. 24 विश्व क्षय रोग दिवस
दि. 25 गणेशशंकर विद्यार्थी बलि. दि.
दि. 27 गौतम ऋषि, डॉ हेडगेवार जयंती विक्रम वर्ष 2066 प्रारंभ
दि. 29 मत्स्यावतार
दि. 31 गुरु हरगोविन्द पु.ति., मीना अवतार

मार्च माह में दिन की स्थिति

दि. 1 शुभ दिन
दि. 2 उत्तम दिन
दि. 3 अशुभ दिन
दि. 4 दिन 1.16 के बाद शुभ
दि. 5 उत्तम दिन
दि. 6 शुभ दिन
दि. 7 सायं 5 बजे के बाद शुभ
दि. 8 शुभ दिन
दि. 9 शुभ दिन
दि. 10 अनिष्ट दिन
दि. 11 वर्जित दिन
दि. 12 शुभ दिन
दि. 13 सायं 5.08 के पूर्व शुभ
दि. 14 शुभ दिन
दि. 15 दिन 12.44 तक शुभ
दि. 16 सामान्य दिन
दि. 17 प्रातः 7.52 के बाद अशुभ
दि. 18 अशुभ दिन
दि. 19 दिन 2 के बाद शुभ
दि. 20 शुभ दिन
दि. 21 सायं 5.38 तक अशुभ
दि. 22 शुभ दिन
दि. 23 शुभ दिन
दि. 24 सामान्य दिन
दि. 25 अशुभ दिन
दि. 26 अनिष्ट दिन
दि. 27 शुभ
दि. 28 दिन 10.26 तक शुभ
दि. 29 सामान्य दिन
दि. 30 अशुभ दिन
दि. 31 सामान्य

पं. संतोष व्यास
बीमा नगर, इन्दौर

डाकघर की विभिन्न बचत योजनाओं में निवेश कर आकर्षक लाभ कमायें

किसान विकास पत्र ❐ छह वर्षीय बचत पत्र ❐ सावधी जमा ❐ ५ वर्षीय आर.डी. खाता ❐ मासिक आय योजना ❐ लोक भविष्यनिधि खाता ❐ वरिष्ठ नागरिक बचत योजना ९ प्रतिशत ब्याज

सम्पर्क सूत्र- डाकघर बचत अभिकर्ता, कृष्णकांत शुक्ल
सी-५९, अभिलाषा कालोनी, देवास रोड़, उज्जैन फोन २५११८८५, मो. ९४२५९-१५२९२

जन्मदिन पर बधाई

ईशान व्यास
(सुपुत्र- शोभा-सतीष व्यास)
जन्म दिनांक 11-03-2000
हाटपीपल्या मो. 9300392424, 9300901267

◆

आयुष नागर
(सुपुत्र- अनिरुद्ध-शोभा नागर)
जन्मदिनांक 14 मार्च
निवास- 19 नेहरु कालोनी, सीहोर
मो. 98931-02444

◆

आशुतोष शर्मा
(सुपुत्र- महेन्द्र-सुनीता शर्मा)
जन्म दिनांक 9.03.2000
माकडोन जिला, उज्जैन मो. 9424815705

◆

मास्टर तुषार नागर
(सुपुत्र-अभय-विनीता नागर)
शुभ मार्केटिंग, महाकाली टेलीकॉम ब्यूरो
न्यू पेट्रोल पंप, सरस्वती नगर,
तराना, जिला उज्जैन
फोन 07369-235003, मो. 9993766643

◆

द्वितीय वर्षगांठ पर बधाई
कुन्दन रावल
(सुपुत्र- गुड्डू रावल)
गणेश महिमा प्रसाद भंडार
गणेश मंदिर खजराना, इन्दौर
मो. 9981929595

वैवाहिक (युवक)

अपूर्व सुशील कुमार नागर
जन्म दिनांक 9.04.1982
शिक्षा- बी.कॉम. एल.एल.बी.
कार्यरत- एड्व्होकेट
सम्पर्क- 07270-222487, मो. 98270-61512

आनन्द पुरुषोत्तम रावल
जन्म दिनांक- 14.11.1980
शिक्षा- बारहवीं
कार्यरत- सागर ऑटोमोबाईल्स (कम्प्यूटर अकांउटेंट)
सम्पर्क- 94 बैंक कॉलोनी, अन्नपूर्णा रोड, इन्दौर
फोन 0731-2480353, मो. 9893051511

अर्पित अभयचंद मेहता
जन्मतिथि 25-1-1982
शिक्षा- एम.बी.ए (आईटी एंड मार्केटिंग)
कार्यरत- रिलायंस कम्युनिकेशन मुंबई
सम्पर्क - (07272) 250446, मो. 94250-48746

वैवाहिक (युवती)

मेघा दिनेश जोशी
जन्म दिनांक 22 अगस्त 1980
शिक्षा- बी.पी.टी. (फिजियोथेरेपिस्ट)
एम.बी.ए. (हास्पी.एड.)
सम्पर्क- 0731-2491007

कु. निधि अभयचंद मेहता
जन्मतिथि- 5-11-1980 (शाम 7.30 अजमेर)
शिक्षा - एम.एस.सी. (माईक्रोबायोलॉजी), एम.बी.ए. (एचआर)
सम्पर्क- बी-56, कालानी बाग, देवास
फोन (07272) 250446, मो. 9425048746

कु. पायल अशोक पंचोली
जन्मतिथि- 18-1-1982
शिक्षा- बी.कॉम. (फैशन डिजाईनिंग में डिप्लोमा एवं पेन्टिंग)

कु. पूजा अशोक पंचोली
जन्मतिथि- 29-5-1983
शिक्षा- एम.कॉम. (पेन्टिंग व कम्प्यूटर मे दक्ष)
सम्पर्क- 0731-2559011, मो. 98264-10209

शुभकामनाओं सहित

शर्मा ब्रदर्स

ब्रोकर, कॉटन सीड, केक एंड आईल

4/2, मुराई मोहल्ला, श्री निकेतन, शॉप नं. 1 छावनी, इन्दौर
फोन 2706115, 2707115, मो. 94240-09615, 9826088115, 9826081115, 9926088115, 9009562115

स्वचिन्तन

अच्छा होगा यदि एक प्रश्न अपने आप से कर लेवें। यदि आज का दिन हमारे जीवन का आखिरी दिन हो तो हम परिवार, काम व समाज के उन लोगों से जो हमारी शवयात्रा में सम्मिलित है, क्या सुनना चाहेंगे हम उनसे?

उत्तर यहि होगा कि हमें परिवार के सदस्यों से यह सुनने को मिले तो हमें संतुष्टी मिलेगी, अच्छा लगेगा कि कितना प्यार करते थे? कितना समय देते थे? कितना ध्यान देते थे? हमें कितने अच्छे संस्कार दिये? सदैव खुश रहते थे? जीवंत रहते थे? हम भी उसी तरह बनना चाहेंगे उनकी कमी हमें सदैव रहेगी।

काम के साथियों से यहीं सुनना चाहेंगे-कितना सहयोग करते थे? कितनी मदद करते थे? सदैव अच्छी तरह से काम करते व व्यवहार करने को प्रेरित किया करते थे?

अपने वरिष्ठजनों से सुनना चाहेंगे-कितने अनुशासित थे? समय के लिए प्रतिबद्ध थे? कितनी गुणवत्ता का काम किया करते थे? अपने लक्ष्य को सदैव प्राप्त करने के लिए सजग रहते थे?

अपने कनिष्ठजनों से सुनना चाहेंगे- कितने नम्र थे कितना प्रेमपूर्वक व्यवहार करते थे? हमें कितना सिखाया? कभी क्रोध नहीं करते थे? हमारे पथ प्रदर्शक थे? मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे?

समाज के व्यक्ति जिनसे हम जुड़े थे अगर यह कहे तो अच्छा लगेगा कितने सामाजिक थे? समाज को जोड़ने व उसमें योगदान के लिए सदैव सजग थे? सकारात्मक थे और मदद करते थे। परन्तु क्या हम यह सब सुनेंगे या कुछ और? करे क्या? आज से अभी से जिन्दगी के बचे हुए हर दिन का हिसाब-किताब करें तो क्या हमें यह सब सुनने को मिलेगा शायद नहीं। मौत का एहसास हमें जिन्दगी बेहतर जीने के लिए प्रेरित करता है। मौत जो सबसे कठोर सच्चाई है उसका बोध निरन्तर रहे तो जिन्दगी अच्छे-अच्छे कामों को करके संतुष्टि पाने के लिए छोटी पड़ जायेगी समय का अच्छा उपयोग कर जीवन सफल बनावें।

'विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।।'

संकलन- श्रुति शर्मा, इन्दौर
(साभार- जीवन के रंग खुशियों के संग से)

विशेष सूचना

''साक्षात्कार, प्रत्यक्ष-सत्य से'' नकद पुरस्कार 500/- पांच सौ रुपये

जय हाटकेश वाणी के फरवरी 09 के अंक में प्रकाशित उक्त शीर्षक से सम्बंधित उत्तर देने की अवधि दिनांक 25.3.09 तक बढ़ा दी गई है। कारण यह है कि अनेक सदस्यों को डाक की गड़बड़ी के कारण 18.2.09 तक उक्त अंक प्राप्त नहीं हुआ। कृपया उत्तर भेजते समय निम्न बातों का ध्यान रखें:-

(1) उत्तर संक्षेप में सरल भाषा में हो तथा पांडित्य प्रदर्शन नहीं।

(2) जो प्रश्न पूछे गये हैं उनका उत्तर दिये गये लेख में समाहित है, अपने दिमाग पर अनावश्यक बोझ न डालें।

(3) यह लेख मध्यमवर्गीय सदस्यों के लिये है। उच्चवर्गीय एवं साहित्य मनीषी कृपया क्षमा करेंगे।

(4) लेख एवं पुरस्कार योजना का उद्देश्य अधिकतम लोगों को आत्मचिंतन की ओर प्रेरित करना है।

(5) जिन सदस्यों ने उत्तर भेज हैं वे भी चाहे तो उक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए पुनः अपने उत्तर संशोधित कर भेज सकते हैं।

-रामचन्द्र जोशी
122-बी, संतराम सिन्धी कालोनी,
सांवेर रोड, उज्जैन फोन 0734-2513675

ब्राह्मणों के लिए गायत्री उपासना की उपादेयता

हमारे पुण्यों के प्रतिफल स्वरुप ब्राह्मण कुल में हमारा जन्म हुआ है। ब्रह्म को जानने वाला ब्राह्मण कहलाता है। ब्राह्मण बालक जन्म से ब्राह्मण होता है, यज्ञोपवित संस्कार के बाद वह द्विज होता है, और वेद विद्यादि के अध्ययन से विप्र नाम से संज्ञित होता है। पद्म पुराण के अनुसार ब्राह्मण देवताओं का भी देवता है संसार में उसके समान दूसरा कोई नहीं है। वह साक्षात धर्म की मूर्ति है, मोक्ष का प्रदाता है। ब्राह्मण के शरीर में सदा ही श्री विष्णु का निवास है ब्राह्मणों की पूजा करने वाला मनुष्य कभी दरिद्र दुःखी और रोगी नहीं होता है। घर ब्राह्मणों की धूलि पड़ने से पवित्र व शुद्ध हो जाता है। यज्ञ कर्म व अन्य मांगलिक कार्यों में ब्राह्मण ही सदा उत्तम माने गये हैं। ब्राह्मण के बिना दान होम व बलि सब निष्फल होते है। पुराण कथा व भागवत करने का अधिकार एक मात्र ब्राह्मणों को ही है, वे ही इसके योग्य माने गयेहैं।

किन्तु आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम अपने आप को खो बैठे है। अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्व की इति श्री कर बैठे। यह सोचनीय विषय है हम कहां थे और आज कहां हैं। आचरण त्याग बैठे व सदाचार को तिलांजलि दे बैठे। आकाश में जिनके वस्त्र तप के बल सूखते थे वे मद्विपति राह भटक गये हैं। अब आवश्यकता है उस भूल भटकन से उबर कर सही राह पर आ खड़े हों। अपने महत्व को समझे, कसौटी पर खरे उतरें। गौरव पूर्ण स्थिति को पाये। खासकर नौजवान के बल अपना खोया अस्तित्व स्वाभिमान व योग्यता को लौटा लावें। भार उन्हीं के कंधे है वे अपने कर्म व धर्म को पुर्नस्थापित करने के प्रयासों में कोई कसर बाकि न रखे, और हम ब्राह्मण बने रहे। जैसा कहा गया है ब्रह्म को जानने वाला ही ब्राह्मण होता है और ब्रह्म को जानने का सरलतम उपाय गायत्री उपासना है। ब्राह्मणों के लिए गायत्री उपासना अनिवार्य है तभी वह उस ब्रह्म तेज को प्राप्त कर सकता है। त्रिपदा गायत्री का प्रतिदिन जप करने वाला ब्रह्म पद को प्राप्त होता है। हम सभी जानते है गायत्री मन्त्र का छन्द गायत्री और देवता सविता है गायत्री देवी का वर्ण शुक्ल, मुख अग्नि और ऋषि विश्वामित्र है ब्रह्मजी उनके मस्तक स्थानीय है, उनकी शिखा रुद्र और हृदय श्री विष्णु है। गायत्री को नहीं जानने वाला अधम माना गया है। गायत्री गुरुवर है, मोक्ष देने वाली है। गायत्री मंत्र के दस बार जपने से वर्तमान जन्म के सौ बार जपने से पिछले जन्म के तथा एक हजार बार जपने से तीनों युगों के पाप नष्ट हो जाते है। जो सबेरे व शाम को रुद्राक्ष की माला पर गायत्री का जप करता है। वह निः संदेह चारों वेदों का फल प्राप्त करताहै। जो द्विज एक वर्ष तक अहर्निश तीनों समय गायत्री का जप करता है उसके करोड़ों जन्मों के उपार्जित पाप नष्ट हो जाते हैं। गायत्री मंत्र के उच्चारण मात्र से पाप राशि से छुटकारा मिल जाता है, व्यक्ति शुद्ध हो जाता है तथा जो द्विज श्रेष्ठ प्रतिदिन गायत्री का जप करता है उसे स्वर्ग व मोक्ष दोनों प्राप्त होते है। गंगा स्नान का फल सहज में मिल जाता है, सिद्धी प्राप्त हो जाती है। यश, वैभव का पात्र हो जाता है। गायत्री मंत्र महामंत्र कहा गया है। इसके जाप से यान पात्र, प्रवास व राजगृह में अत्यंत श्रेष्ठ सिद्धी प्राप्त होती है। गायत्री जपने वाले को राजा, दुष्ट, राक्षस, अग्नि, वायु और सर्प से भय नहीं होता। जहां गायत्री का जप होता है वहां अग्नि हानि नहीं पहुंचाती, नाहीं नाग वास करते है। प्रस्थान काल अथवा प्रवास के समय गायत्री मंत्र के जप से वांछित फल की प्राप्ति होती है। सविता व गायत्री ही बला अतिबला विद्या है श्रीराम व श्रीकृष्ण भी गायत्री के उपासक रहे हैं। गायत्री मंत्र को छोड़कर अन्य किसी मंत्र में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह साधक के प्राणों की रक्षा कर सके। मंत्र के अनुसार गायत्री जाप ही सबसे बड़ा जप है जो भारी से भारी पाप से मुक्त कर देता है। गायत्री वेद का मुख है गायत्री लौकिक वैभव देने वाली है। मानव को मानव बना देती है। नर से नारायण बना देती है। लोक परलोक में सुख चाहने वाले गायत्री का जप करते रहे। गायत्री जप से बड़ी शक्ति मिलती है। सद्बुद्धि के लिए उपासना मंत्र है।

जल सतयुग में प्यासे की प्यास बुझाता था कलयुग में भी प्यास बुझा रहा है। अन्न पहले भी भूख मिटाता था आज भी। सूर्य, वर्षा तब भी थे आज भी है। गायत्री मंत्र पूर्व में भी फलदायी था आज भी है। गायत्री जप सनातन है। गायत्री वेद माता है, वरदानों को देने वाली है। कल्पवृक्ष है। आयु स्वास्थ, संतान, धन, अन्न, पशु, वैभव, यश देने वाली गायत्री ही है। परमात्मा के दर्शन कराने वाली है सर्वश्रेष्ठ श्रुति है अतः गायत्री जप ब्राह्मणों के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।

हम गायत्री रुपी वीणा के मधुर रसीले व चित्ताकर्षक स्वरों को जाने पहचाने व बजाना सीखे और अपने को खोजे। नवनिर्माण में लगे सृजनात्मक व सकारात्मक सोच रखें। गायत्री उपासना कर सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो। आज भौतिक उन्नति तो इतनी हुई है कि पहले कभी नहीं हुई थी परन्तु अशान्ति भी आज पहले से कहीं अधिक है। मेरा अन्त में अनुरोध है कि आप पारस मणी पाकर दीन न बने रहे। अच्छी शुरुआत आज ही से करें। ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर ब्राह्मण बने रहें। सन्त बन दूसरों को सन्त बना डालें। सन्तत्व आपकी पहचान है। संस्कारवान बन के बता दें। यही आपका हमारा कर्म है धर्म है।

पं. रमेश रावल
डेलची (माकड़ोन)

शांतनु त्रिवेदी का चयन इन्फोसिस में

इन्दौर। नागर समाज के गौरव रायसाहब श्री दुर्गाशंकरजी त्रिवेदी के पौत्र शांतनु त्रिवेदी (सुपुत्र- प्रवीण-मीना त्रिवेदी) का चयन विश्व की जानी-मानी कम्प्यूटर कम्पनी इन्फोसिस में 'साफ्टवेअर इंजीनियर' के पद पर हुआ है। इन्फोसिस टेक्नालॉजी लिमिटेड ने प्रशिक्षण हेतु मैसूर में शांतनु को आमंत्रित किया है। ज्ञातव्य है कि शांतनु त्रिवेदी ने स्वामी विवेकानन्द इंजीनियरिंग कॉलेज से बी.ई. (इलेक्ट्रॉनिक एंड टेलीकम्युनिकेशन) किया है। होनहार एवं विशेष योग्यता की बदौलत शान्तनु का चयन केम्पस सिलेक्शन में ही हो गया था, जबकि अपाईंटमेंट लेटर हाल ही मेंप्राप्त हुआ। उनकी इस उपलब्धि से समस्त रायसाहब परिवार गौरवान्वित हुआ हैं, वहीं नागर समाज भी गद्-गद् है।

वैभव नागर को सुयश

इन्दौर। श्री वैभव नागर (सुपुत्र- श्याम सुन्दर नागर, पौत्र पं. दुर्गाशंकरजी नागर) ने बी.ई. इन्स्ट्रूमेंटेशन एंड कंट्रोल (IC) महाकाल इंस्टीट्यूशन उज्जैन से करने के बाद पुना से सी. डेक में विशेष योग्यता प्राप्त की। विद्यार्जन करने के पश्चात इनकी प्रथम नियुक्ति सृष्टि साफ्टवेअर साल्यूशन मुंबई में हुई। विशेष योग्यता एवं अनुभव के आधार पर आपकी नियुक्ति हाल ही में डे कॉम साफ्टवेअर डेवलपमेंट प्रा. लि. पुना में हुई हैं शिक्षा एवं करियर के क्षेत्र में ऊँचाईयां छूने वाले वैभव की संगीत के क्षेत्र में भी गहरी पकड़ है। फलस्वरुप सम्पूर्ण परिवार गौरवान्वित है, साथ ही समूचा नागर समाज इस अवसर पर बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कर रहा है।

प्रस्तुति - रविन्द्र व्यास
सम्पर्क- श्यामसुन्दर नागर
फोन 2385299, मो. 9893356711

प्रथम 'पीपुल मेनेजर अवार्ड २००९' से विभूषित

भारती एअरटेल कंपनी द्वारा फरवरी 2009 में अपने कर्मचारी। अधिकारियों के कार्य-संपादन (अवधि अगस्त 07 से जुलाई 08) का स्वचलित सर्वे कराया।

कार्य सम्पादन में सहजता से त्वरित प्रगति, कार्यालयीन रिपोर्टस में कार्य के प्रति प्रशंसात्मक टिप्पणी, सर्वाधिक अंक प्रतिशत का अर्जन, कार्य सहयोगियों के साथ समन्वय/सहजता/स्नेह/एकता के साथ निर्विवाद व्यवहार, उपभोक्ता जनता से मधुरता के साथ सद्व्यवहार/आदि उच्चांक अर्जित करने के प्रति, कंपनी के राष्ट्रीय कार्यालय नई दिल्ली में हाल ही में कुछ माह पूर्व उन्नयित कार्यरत् श्री आशुतोष पी.जोशी नेशनल हेड (बी) (एड्रेस व्हेरीफिकेशन) को, भारती एअरटेल कंपनी द्वारा इसी वर्ष स्थापित प्रथम, 'पीपुल मेनेजर अवार्ड 2009' से एक समारोह में विभूषित किया। नागर समाज के लिए यह सम्मानित गौरव की एक उपलब्धि स्वागत योग्य प्रतिती है। मानव अपने कर्तव्य-दायित्व के प्रति रुचि/लगन/सहयोगी से सक्रिय मधुर संबंध/जनता से सद्व्यवहार का दृष्टिकोण/अनुभव ग्राह्यता रखें तो गुणवत्ता वृद्धि के साथ सफलता का क्षितिज सामने ही होगा।

-पुरुषोत्तम पी.जोशी

मो. 09406643111

वैदिक पं. द्विजेन्द्र व्यास

महर्षि महेश योगी विद्यापीठ गुरुकुल (होलीपुरा) से अध्ययन प्राप्त

अनुष्ठान, ज्योतिष,कर्मकाण्ड,यज्ञ,प्राणप्रतिष्ठा,मंगलदोष व कालसर्प दोष शांति, वास्तु पूजन, जन्म कुण्डली, पत्रिका मिलान एवं सभी प्रकार के पूजन विधी विधान से सम्पन्न करवाने हेतु संपर्क करें।

सम्पर्क सूत्र- श्री परशुराम ज्योतिष अनुष्ठान कार्यालय विवेकानन्द नगर, शिव मंदिर के नीचे, झाबुआ (म.प्र.)

❒ संरक्षक
श्रीमती निर्मला कमलकिशोरजी नागर
सेमली-मालवा फोन 9329144644
श्रीमती शारदा विनोद मंडलोई
इन्दौर फोन- 0731-2556266
श्रीमती आशा ओमप्रकाशजी मेहता
भोपाल 07552552100
श्रीमती प्रभा शिवप्रसादजी शर्मा
इंदौर 07312450018
श्रीमती रमा सुरेंद्रजीमेहता 'सुमन'
उज्जैन 07342554455
श्रीमती अंजना सुरेंद्रजी मेहता
शाजापुर 07364229699

❒ प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा 99262-85850
❒ संपादक
सौ.रुचि उमेश झा 98260-46043
❒ सह सम्पादक
सौ.मीना प्रवीण त्रिवेदी 93290-78757
सौ.शीला जगदीश दशोरा
फोन-0731-2562419
सौ.तृप्ति निलेष नागर
मोबा. 9303229908
सौ.मंजू रविन्द्र व्यास
मो. 92298-25454
सौ.सोनिया विवेक मंडलोई
मो. 097121-38061
सौ.वन्दना विनीत नागर
फोन- 2594507
सौ.निशा पं.अशोक भट्ट
मो.9302105856
सौ.बिन्दु प्रदीप मेहता
मो. 94240-84744
सौ.ज्योति राजेन्द्र नागर
मो.93032-74678
सौ.ममता मुकुल मंडलोई
फोन- 0731-2484370
सौ.आशा योगेश शर्मा
मो. 94250-72237

❒ प्रदेश संवाददाता ❒
उज्जैन- मो.9977766777
सौ.तृप्ति संदीप मेहता
उज्जैन- मो.9301137378
सौ. अनामिका मनीष मेहता
शाजापुर-मो.94250-34818
सौ.चेतना विवेक शर्मा
खण्डवा-मो.98267-74742
सौ.शोभना सरोज जोशी
खरगोन-मो.98936-18231
सौ.वर्षा आशीष नागर,
रतलाम-मो.94251-03628
सौ.हर्षा गिरीश भट्ट
नीमच-मो.94240-33419
सौ.सावित्री रमेश नागर
नागदा-मो.98270-85738
सौ.शैलबाला विजयप्रकाश मेहता
भोपाल-फोन-0755-2463303
सौ.पूर्णिमा डॉ.पियूष व्यास
खड़ावदा-मो. 98267-32441
सौ.नैना ओमप्रकाश नागर
पचौर-मो.94244-65799
सौ.संध्या शैलेन्द्र नागर
रीवां-मो.-94258-74798
सौ.मालिनी किशन पण्डया
राऊ-फोन-0731-6538275
सौ.माया गिरजाशंकर नागर
माकड़ोन-फोन-07369-261391
सौ.सुनीता महेन्द्र शर्मा
पीपलरावां-फोन-07270-277722
सौ.शकुंतला हरिनारायण नागर
देवास-मो.98273-98235
सौ.सरिता मोहन शर्मा
सागर- मो. 98270-88588
श्रीमती अलका प्रमोद नागर
झाबुआ- मो. 9424064104
सौ. लीना-राजेश नागर

❒ अंतर्राज्यीय संवाददाता ❒
नई दिल्ली-श्रीमती मृदुला-सुधीर पांड्या
ई-921, सरस्वती विहार, दिल्ली- 34
फोन-09868048080
मुम्बई-सुश्री कांता बेन त्रिवेदी
2, प्रेम नगर सर विठ्ठलदास नगर नार्थ
एवेन्यू रोड सांताक्रुज वेस्ट, मुम्बई
फोन-022-26604762
कोलकाता-सौ. शशि आर.के. झा
पी-6 डोबसन लेन हावड़ा-01
फोन-033-26665094
हैदराबाद-नवरत्न राजेन्द्र व्यास
के. चन्द्रकांत ज्वेलर्स
21-3-131/7, आगरा होटल के पास
चरकमान, मो.09346998456
इलाहाबाद-श्रीमती सुधा नित्यानंद नागर
60/45, ऊँचा मंडी, फोन- 0532-2240059
जूनागढ़-सौ. गिरा-दुर्गेश आचार्य
'अमर' गोकुल नगर
बी/एच. लोहियावाड़ी, जूनागढ (गुज.)
भावनगर- श्रीमती रश्मि पाठक
1233, गौमुखी सोसायटी अम्बावाड़ी
मो. 9428750541
अकलेरा- श्रीमती गायत्री-कुलेन्द्र नागर
जिला झालावाड़ फोन 07431-272506
प्रतापगढ़-श्रीमती मंजू शिवशंकर नागर
'प्रज्ञा' सांवरिया कालोनी, एरियापति मार्ग
बांसवाड़ा-राजेन्द्रप्रसादजी त्रिवेदी
27/1,सुभाष नगर, फोन-09413626058
चित्तौड़गढ़-श्रीमती पुष्पा डॉ. रमेश दशोरा
39, नगर पालिका कालोनी,मो 9414097972
कोटा-श्रीमती आशा डॉ. अशोक मेहता
4-एफ/16, विज्ञान नगर, फोन-982910081
उदयपुर-श्रीमती शैला हेमन्त दशोरा
8,दशोरा की गली, मोती चोहट्टा
फोन-02942529620
जयपुर-श्रीमती सुषमा वीरेन्द्र कुमार नागर
सी-5, प.नै.बैंक अधिकारी आवासीय
कालोनी, जगतपुरा रोड, मालवीय नगर,
मोबा.-09414214143

अबलाएं हैं शक्तिशाली आत्मिक बल में,
इसे सिद्ध कर दिया उन्होंने समर स्थल में।

सम्पादकीय

चुनौतियां बढ़ी, सम्मान घटा

वर्तमान समय में महिलाओं की चुनौतियां प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ी है। भारतीय संस्कृति के परिवेश में यदि देखा जाए तो परिवार का उपयुक्त पालन-पोषण तथा बच्चों के संस्कारों की जिम्मेदारी नारी पर ही है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस ऐसा अवसर होता है जब महिलाओं के कर्तव्यों एवं अधिकारों के बारे में चर्चा होती है जबकि इस कलयुग में महिलाओं की जिम्मेदारियां इतनी बढ़ गई कि समाज को उसके लिए प्रतिदिन-सतत चिंतन करना चाहिए।

सबसे पहले उन परिवारों को जो परंपरागत दकियानुसी के कारण अपनी बेटियों को पढ़ाना नहीं चाहते, वे यह बात सोचें कि आज महिलाओं को समुचित रुप से शिक्षित होना चाहिए, एक संस्कारवान परिवार की गरज से नहीं अपितु परिवार के संचालन हेतु अपने जीवनसाथी के आर्थिक रूप से साथी बनने की गरज से भी। हम सभी देख रहें हैं कि वर्तमान समय में परिवारों के खर्चों में अनाप-शनाप वृद्धि हो रही है, तथा महिलाओं को न चाहते हुए भी नौकरी करना पड़ती है। अब एक व्यक्ति परिवार का आर्थिक बोझ ढोने में सक्षम नहीं है। इस दृष्टि से महिलाओं की जवाबदारियां भी बढ़ी है तथा चुनौतियां भी। जैसे परिवार का पालन, बच्चों को संस्कारवान बनाना, साथ ही परिवार चलाने हेतु नौकरी या कारोबार करना। इतनी सब जिम्मेदारियां निबाहने के बाद भी आज महिलाएं दायरों में बंधी हुई है। पति परमेश्वर की सेवा तो उसका धर्म है ही, अपने व्यस्ततम जीवन में उसे घर को सजाना संवारना भी है। बच्चों पर भी पर्याप्त ध्यान देना है, क्योंकि उनकी लाईन खराब होने की जिम्मेदार भी अंततः 'माँ' है। महिलाएं संवेदनशीलता का जीता-जागता उदाहरण है, उन्हें सारी भाग-दौड़ के बावजूद 'गुस्सा' करने का अधिकार नहीं है। स्वयं द्वारा कमाया गया पैसा वे अपने मन से अपने ऊपर खर्च नही करती है। अतः उन्हें स्वयं भी संस्कारवान बने रहना पड़ता है। हम देखते हैं कि टीवी धारावाहिकों में महिला का 'खलनायिका' वाला व्यक्तित्व प्रस्तुत किया जाता है जबकि वास्तविकता यह है कि आज जिम्मेदारियों से लदी महिलाएं समाज में अनेक चुनौतियों के बावजूद अपना उजला संस्कारवान रुप प्रस्तुत कर रही है। आमतौर से लोग उनके बारे में कुछ भी उधेडबुन करते रहें लेकिन आज की नारियां परिवार, समाज तथा देश में अपनी उज्जवल छवि प्रस्तुत कर रही है। वे अपनी तमाम प्रतिबद्धताओं के साथ ही सर्वोच्च पद 'राष्ट्रपति' तक पहुंची हो या केन्द्र सरकार को कठपुतली की तरह चलाती हों। वे एक संस्कारवान परिवार को बनाने तथा हर मोर्चे पर अपना महत्व दर्शा रही है। पुरुष जब केवल पैसा कमाने के नाम पर अपनी बाकि जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ लेते हों, तब महिलाएं जीवन के प्रत्येक मोड़ पर जिम्मेदारियों से रूबरू होकर भी अंततः सम्मान एवं प्रेम के लिए नतमस्तक ही पाई जाती है।

- संगीता शर्मा

सम्पादक मंडल में परिवर्तन

मासिक जय हाटकेश वाणी पत्रिका का आगामी अप्रैल माह में दो वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर सम्पादक मंडल में परिवर्तन किया जा रहा है। हालांकि पिछले सम्पादक मंडल में सम्मिलित सभी सदस्यों ने भरपूर सहयोग किया है, लेकिन प्रकाशक मंडल की मंशा है कि सम्पादक मंडल में समाज सेवा से जुड़े नए सदस्यों को शामिल कर उन्हें भी सेवा का अवसर दिया जाए। अतः सम्पादक मंडल में शामिल होने के इच्छुक सदस्य निम्न लिखित पते पर सम्पर्क करें

पूर्व सम्पादक मंडल का आभार एवं उनसे पूर्ववत सहयोग प्राप्त होता रहे इसी आशा के साथ।

पवन शर्मा,
मो. 98260-95995

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं.....

पूरा पता (पिनकोड सहित).....

.....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/-रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/C नं. 0212002100245085 में जमा किया है।

श्रीमान संपादक महोदय
मासिक जयहाटकेश वाणी
20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर
फोन. 2450018 फैक्स-2459026 मो.9425063129
Email-manibhaisharma@gmail.com
jayhotkeshvani@gmail.com

नवरात्रि पर्व और गायत्री की विशेष साधना

सर्दी और गर्मी की ऋतु के मिलन-काल को आश्विन (कुंवार) और चैत्र की नवरात्रि कहा जाता है। रात्रि और दिन का मिलन प्रातःकालीन और सायंकालीन 'संध्या' के नाम से विख्यात है। इस मिलन वेला का विशेष महत्व कालचक्र के अनुसार आंका गया है। मिलन की वेला ही क्षेत्र में उल्लास भरी होती है। मित्रों का मिलन, प्रणय मिलन, आत्मा और परमात्मा का मिलन तृप्तिदायक होता है। पुराने वर्ष की विदाई और नये वर्ष का आगमन वाला दिन नव हर्षोत्सव के रुप में मनाया जाता हैं। कृष्णपक्ष व शुक्ल पक्ष के परिवर्तन के दो दिन अमावस्या, पूर्णिमा पर्व के नाम से जाने जाते हैं। अपने पर्व त्यौहारों में से अधिकांश इसी संधिवेला में मनाये जाते हैं दिपावली, होली, गुरुपूर्णिमा, श्रावणी, हरियाली अमावस्या, पितृ अमावस्या, शरदपूर्णिमा आदि प्रमुख पर्व कृष्णपक्ष व शुक्ल पक्ष पर ही होते हैं।

चैत्र की नवरात्रि आरम्भ होते ही विक्रमी संवत् बदलता है और उन नौ दिनों का अन्त होते ही राम जन्मोत्सव रामनवमी आ जाती है। इसके चार पांच दिन बाद ही चैत्री पूर्णिमा की हनुमान जयंती आती है। आश्विन अमावस्या को पितृ अमावस्या कहते हैं और उसके दूसरे दिन से ही नवरात्रि पर्व आरम्भ हो जाता है। इसके समाप्त होते-होते दुर्गा अष्टमी और विजयादशमी आ जाती है। उसके चार-पांच दिन बाद ही शरदपूर्णिमा आ जाती है। पर्वों की यह विशिष्ट श्रृंखला अकारण ही नहीं है। कालचक्र के सूक्ष्म ज्ञाताओं ने प्रकृति के अन्तराल में चल रहे विशेष उभारों को दृष्टिगत रखते हुए यह सोचा है कि उन दिनों की हुई आध्यात्मिक साधनाएं भी विशेष रूप से सफल होती है। तदनुसार चैत्र और आश्विन के शुक्ल पक्ष आरम्भ होते ही नौ-नौ दिन के नवरात्रि पर्व मनाये जाते हैं।

ऋतुएं वर्ष में दो बार ऋतुमती होती है। सर्दी-गर्मी प्रधानतया दो ही ऋतु हैं। दोनों के समय छै-छै महीने के हैं। वर्षा इनके बीच-बीच में ही आंख मिचौनी खेलती रहती हैं। इन दिनों प्रधान ऋतुओं का ऋतुकाल नौ-नौ दिन का होता है। नवरात्रि इन्हीं दिनों को कहते हैं। वैसे तो सारा ही समय भगवान का है और सभी दिन पवित्र हैं। शुभ कार्य करने का हर घड़ी शुभ मुहूर्त है और अशुभ कर्म के लिए काल राहु, दिशाशूल, योगिनी, विपरीत चन्द्रमा आदि के अनेकानेक बंधन प्रतिरोध हैं। सामान्य या विशेष उपासना करने में कभी कोई प्रतिबन्ध नहीं है। शुभ कार्य के लिए कोई मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी काल चक्र की प्रतिक्रिया से लाभ उठाने में बुद्धिमता ही है।

नवरात्रि पर्व में विभिन्न उपासनाएं चलती हैं। राम भक्त उन दिनों रामायण पारायण और कृष्ण भक्त गीता पारायण करते हैं। देवी उपासक दुर्गा पाठ व तपस्वी व्रत-उपवास करते हैं। तंत्र विधान में शव साधना, कुमारी पूजना, कुण्डलिनी जागरण, चक्रवेधन आदि की साधनाएं विशेष रूप से इन्हीं दिनों सम्पन्न की जाती है। मध्यकाल में तंत्र प्रयोजनों की मान्यता अधिक थी इसीलिए इन्हीं दिनों वैयक्तिक एवं सामूहिक क्रिया-कृत्य किये जाते थे। आज भी जहां-जहां देवियों के मंदिर हैं, वहां छोटे-बड़े तांत्रिक आयोजन होते हैं। यह समय सतोगुणी साधनाओं के लिए भी अधिक उपयुक्त है किन्तु प्रचलन इन दिनों दुर्गा पूजन के नाम से ही चल पड़ा है। बंगाल, आसाम, उड़ीसा, मणिपुर, नेपाल, भूटान एवं गुजरात में दुर्गा पूजा के विशेष समारोह होते हैं। इन प्रचलनों से यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि प्राचीन काल में साधना की दृष्टि से नवरात्रियों को कालचक्र के अनुसार कितना अधिक महत्व दिया गया था और यह प्रथा किसी न किसी रूप में आज भी अलग-अलग स्थानों में पृथक-पृथक रूप में चलती पाई जाती है। मानवी चेतना के परिमार्जन परिशोधन के लिए योग साधना एवं तपश्चर्या करने हेतु संधिकाल की नवरात्रि वेला से श्रेष्ठ और कोई समय नहीं है।

वैदिक साहित्य में नवरात्रियों का विस्तृत वर्णन मिलता है। ऋषियों ने इनकी व्याख्या करते कहा है कि इसका शाब्दिक अर्थ तो नौ रातें हैं। परन्तु इनका गूढार्थ कुछ और ही है। नवरात्रि का तात्पर्य यह है कि मानवी काया रूपी अयोध्या में नौ द्वार अर्थात् नौ इन्द्रियां है। अज्ञानतावश दुरुपयोग के कारण उनमें जो अंधकार छा जाता है उसे अनुष्ठान करते हुए एक-एक रात्रि में एक-एक इन्द्रिय के ऊपर विचारना, उसमें संयम साधना तथा सन्निहित क्षमताओं को उभारना ही वस्तुतः नवरात्रि की साधना कहलाती है। रात्रि का अर्थ है अन्धकार जो मनुष्य इन नौ द्वारों से नौ इन्द्रियों के विषयों से जागरुक रहता है, वह उनमें लिप्त नहीं होता और न ही उनका दुरुपयोग करके अपने ओजस्-तेजस् और वर्चस् को गंवाता है।

अनुष्ठान का अर्थ हैं- 'अतिरिक्त आध्यात्मिक सामर्थ्य उत्पन्न करने हेतु संकल्प पूर्वक नियत संयम प्रतिबंधों एवं तपश्चर्याओं के साथ विशिष्ट उपासना। वस्तुतः इन नवरात्रियों में सर्वसाधारण से लेकर योगी,यती, तपस्वी सभी अपने-अपने स्तर की संयम साधना एवं संकल्पित अनुष्ठान करते हैं। इसमें उपासना क्रम का निर्धारण कुछ ऐसा है जिसका पालन कर सकना सभी के लिए सुलभ है। इस अवधि में 24 हजार का लघु गायत्री अनुष्ठान भी पूरा हो जाता है। गायत्री परम सतोगुणी-शरीर और आत्मा में दिव्य तत्वों का आध्यात्मिक विशेषताओं का अभिवर्धन करने वाली महाशक्ति है। यही आत्म कल्याण का मार्ग है। गायत्री साधकों को यही साधना इन दिनों करनी चाहिए।

नवरात्रि को नवदुर्गा की उपासना से भी जोड़ा गया है। सभी और दुर्गा की, महाकाली की पूजा होती है। दुर्गा का सामान्य अर्थ है दोष-दुर्गुणों, कषाय-कल्मषों को नष्ट करने वाली महाशक्ति। नौ रूपों में माँ दुर्गा की उपासना इसीलिए की जाती है कि वह हमारे इन्द्रिय चेतना में समाहित दुर्गुणों को नष्ट करती है। मनुष्य की पापमयी वृत्तियां ही महिषासुर है। नवरात्रियों में उन्हीं प्रवृत्तियों पर मानसिक संकल्प द्वारा अंकुश लगाया और संयम द्वारा दमन किया जाता है।

-श्रीमती मनीषा शर्मा
उज्जैन

लक्ष्मी कहां रहती हैं?

महाभारत में एक कथा आती है। देवासुर सग्राम के बाद एक बार देवराज इन्द्र ने बड़ी कठिनता से असुर राज बलि को ढूंढ निकाला। उस समय वे छिपकर किसी खाली घर में गदहे के रुप में कालक्षेप कर रहे थे। इन्द्र और बलि में कुछ बाते हो रही थी। बलि ने इन्द्र को तत्वज्ञान का उपदेश दिया तथा काल की महत्ता बतलायी। बात दोनों में चल ही रही थी कि एक अत्यन्त दिव्य स्त्री बलि के शरीर से निकल गयी। इसे देख इन्द्र को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने बलि से पूछा- 'दानवराज! तुम्हारे शरीर से यह प्रभामयी कौन सी स्त्री बाहर निकल पड़ी? यह देवी है अथवा आसुरी या मानुषी?

बलि ने कहा- 'न यह देवी है न मानुवी और न आसुरी यह क्या है तथा इसे क्या अभिप्रेत है तुम इसी से पूछो।' इस पर इन्द्र ने कहा 'देवी! तुम कौन हो तथा असुरराज बलि को छोड़कर मेरी ओर क्यो आ रही हो?

इस पर वह प्रभामयी शक्ति बोली-देवेन्द्र! न तो मुझे विरोचन जानते थे और न उनके पुत्र ये बलि ही। पण्डित लोग मुझे सुस्सहा, विधित्सा, भूति, श्री और लक्ष्मी के नामों से पुकारते हैं। तुम और दूसरे देवता भी मुझे नहीं जानते।

इन्द्र ने पूछा आर्ये! तुम बहुत दिनों तक बलि के पास रही अब बलि में कौन सा दोष और मुझमें गुण देखकर उन्हें छोड़ कर मेरे पास आ रही हो?

लक्ष्मी ने कहा- देवेन्द्र! मुझे एक स्थान से दूसरे स्थान पर धाता, विधाता कोई भी नहीं हटा सकता।काल के प्रभाव से ही मैं एक को छोड़कर दूसरे के पास जाती हूं। इसलिये तुम बलि का अनादर मत करो।

इन्द्र ने पूछा, सुन्दरी! तुम अब असुरों के पास क्यों नहीं रहना चाहती हो? लक्ष्मी बोली- जहां सत्य, दान, व्रत, तप, पराक्रम तथा धर्म रहते हैं। मैं वहीं रहती हूं। असुर गण इस समय इनसे विमुख हो रहे हैं। पहले ये सत्यवादी, जितेन्द्रिय और ब्राह्मणों के हितैषी थे। पर अब ये ब्राह्मणों से ईर्ष्या करने लगे हैं। झूंठे हाथ घी छूते हैं, अभक्ष्य भोजन करते और धर्म की मर्यादा तोड़ कर मनमाना आचरण करते हैं। पहले ये उपवास और तप में लगे रहते थे। प्रतिदिन सूर्योदय के पहले जागते और रात में कभी दही या सत्तू नहीं खाते थे। रात के आधे भाग में ही ये सोते थे। दिन में तो ये कभी सोने का नाम ही नहीं लेते थे। दीन, अनाथ वृद्ध, दुर्बल रोगी तथा स्त्रियों पर दया करते तथा उनके लिये अन्न वस्त्र की व्यवस्था करते थे। व्याकुल विषादग्रस्त, भयभीत, रोगी, दुर्बल पीड़ित तथा जिसका सर्वस्व लूट गया हो, इसको सदा ढांढस बंधाते तथा उसकी सहायता करते थे। पहले ये कार्य के समय परस्पर अनुकूल रहकर गुरुजनों तथा बड़े बूढ़ों की सेवा में सदा दक्ष चित्त रहते थे। ये उत्तम भोजन बनाकर अकेले ही नहीं खाते थे। पहले दूसरों को देकर पीछे अपने उपभोग में लाते थे। सब प्राणियों को अपने समान ही समझ कर उन पर दया करते थे। चतुरता, सरलता, उत्साह, निरहंकारता सौहार्द्र, क्षमा, सत्य, दान, तप, पवित्रता, दया, कोमल वाणी और मित्रों से प्रगाढ़ प्रेम ये सभी गुण इनमें सदा मौजूद रहते थे।निद्रा,आलस्य,अप्रसन्नता दोष दृष्टि अविवेक, असंतोष और कामना- ये दुर्गुण इन्हें स्पर्श तक नहीं कर सके थे।

पर अब तो इनकी सारी बाते निराली तथा विपरित ही दिख पड़ती है। धर्म तो इनमें अब रह ही नहीं गया है। ये सदा काम क्रोध के वशीभूत रहते हैं। बड़े बूढ़ों की सभाओं में ये गुण हीन दैत्य उनमें दोष निकालते हुए उनकी हंसी उड़ाया करते हैं। वृद्धों के आने पर ये लोग अपने आसनों पर से उठते भी नहीं। स्त्री पति की, पुत्र पिता की आज्ञा नहीं मानता। माता, पिता, वृद्ध, आचार्य, अतिथि और गुरुओं का आदर इनमें उठ गया। संतानों के उचित लालन पालन पर ध्यान नहीं दिया जाता। इनके रसोईये भी अब पवित्र नहीं होते। छोटे बालक आशा लगाकर टक-टकी बांधे देखते ही रह जाते हैं और दैत्य लोग खाने की चीजें अकेले चट कर जाते हैं। ये पशुओं को घर में बांध देते हैं पर चारा और पानी देकर उनका आदर नहीं करते। ये सूर्योदय तक सोते रहते हैं। तथा प्रभात को भी रात ही समझते हैं। प्रायः दिन रात इनके घर में कलह ही मचा रहता है।

अब इनके यहां वर्णसंकर संताने होने लगी हैं। वेदवेत्ता ब्राह्मणों और मूर्खों को ये एक-समान आदर या अनादर देते हैं। ये अपने पूर्वजों द्वारा ब्राह्मणों को दी हुई जागीरें नास्तिकता के कारण छीन लेते हैं। शिष्य अब गुरुओं से सेवा करवाते हैं। पत्नी पति पर शासन करती है और उनका नाम ले लेकर पुकारती है। संक्षेप में ये सब के सब कृतघ्न, नास्तिक, पापाचारी और स्वैरी बन गये हैं। अब इनके बदन पर पहले का सा तेज नहीं रह गया इसलिये देवराज! अब मैने भी निश्चय कर लिया कि अब मैं इनके घर में नहीं रहूंगी। इसी कारण से दैत्यों का परित्याग करके तुम्हारी ओर आ रही हूं। तुम मुझे स्वीकार करो। जहां मैं रहूंगी, वहां आशा, श्रद्धा, घृति, शांति, विजिति, संतति, क्षमा और जया ये आठ देवियां भी मेरे साथ निवास करेंगी। मेरे साथ ही ये सभी देवियां भी असुरों को त्यागकर आ गयी है। तुम देवताओं का मन अब धर्म में लग गया है अतएव अब हम तुम्हारे ही यहां निवास करेगी।

तदनन्तर इन्द्र ने उन लक्ष्मीजी का अभिनन्दन किया। सारे देवता भी उनका दर्शन करने के लिये वहां आ गये। तत्पश्चात सभी लौटकर स्वर्ग में आये। नारदजी ने लक्ष्मीजी के आगमन की स्वर्गीय सभा में प्रशंसा की। एक साथ ही पुनः सभी ने बाजे गाजे के साथ पुष्प और अमृत की वर्षा की। तब से फिर अखिल संसार धर्म तथा सुखमय हो गया।

प्रस्तुति-पं. ऋषभ देव, इन्दौर

(महाभारत शांति पर्व मोक्ष 224-228 वृहत विष्णु स्मृति अध्याय महा. अनुशासन पर्व अध्याय)

महाशिवरात्रि महोत्सव उल्लास से मनाया गया

खण्डवा। स्थानीय नागर समाज खंडवा में भगवान हाटकेश्वर महादेव मंदिर में शिवरात्रि के अवसर पर भूत-भावन भगवान भोलेनाथ की पूजा, अर्चना, अभिषेक कर श्रद्धाभाव से शिवरात्रि महोत्सव मनाया गया। इस वर्ष महाशिवरात्रि को सोमवार होने से श्रद्धालुओं में इस पर्व को लेकर उत्साह अधिक था।

हाटकेश्वर मंदिर में प्रातः से ही पूजा-अभिषेक का आयोजन नागर सजातीय बंधुओं एवं धर्मावलंबियों द्वारा किया गया। सायंकाल महाआरती एवं प्रसाद वितरण कार्यक्रम श्री हाटकेश्वर नागर समाज के अध्यक्ष श्री देवीदास पोत्दार, उपाध्यक्ष श्री विजयनारायण व्यास एवं सचिव श्री प्रेमनारायण व्यास के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। समस्त कार्यक्रमों में सभी नागर बंधुओं का सराहनीय योगदान रहा।

भगवान शिव की शाही पालकी

खंडवा। तिलभाण्डेश्वर महादेव मंदिर में दिनांक 23-2-09 से 25-2-2009 तक महाशिवरात्रि महोत्सव आयोजित किया गया। मंदिर के पं. शिवशंकर भट्ट (त्रवाड़ी) के अनुसार 23 फरवरी को हरीगंज स्थित निवास स्थान से शिवजी की शाही (सवारी) पालकी शोभा यात्रा नगर के विभिन्न मार्गों से होते हुये श्री तिलभाण्डेश्वर मंदिर बुधवारा बाजार पहुंची। इसके बाद रात्रि 10 बजे महापूजन, अभिषेक, संगीतमय भजन के बाद रात 1.00 बजे महाआरती एवं प्रसादी वितरण किया गया। 24 फरवरी को मंदिर परिसर में भजन संध्या, महाआरती एवं प्रसाद वितरण का कार्यक्रम हुआ तथा दि. 25 फरवरी को शाम शिवजी की शाही सवारी में विराजित कर भगवान तिलभाण्डेश्वर को नगर भ्रमण कराया जाकर रात्रि 8.30 बजे पूजन, आरती प्रसाद वितरण हुआ उपरोक्त कार्यक्रमों में सजातीय बंधुओं ने उपस्थिति दी।

श्रीराम मंदिर में मुकुट चढ़ाया

दिनांक 21 फरवरी शनिवार को श्रीमती मंडलोई द्वारा श्री राम मंदिर में मुकुट चढ़ाया गया।

पूर्व विधायक खंडवा श्रीमती नंदा मंडलोई द्वारा जूना राम मंदिर परिसर में मुकुट चढ़ाया गया। कार्यक्रम का आरंभ श्रीराम मंदिर में पूजा-अर्चना से हुआ शोभा यात्रा में समस्त सजातीय बंधु सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। दोपहर को सहभोज का आयोजन स्थानीय हाटकेश्वर नागर धर्मशाला में किया गया। समस्त कार्यक्रमों में श्री अमिताभ मंडलोई, श्री राघवेन्द्र राव मंडलोई, श्री बसंत मंडलोई, श्री भोज मंडलोई, श्री मनोज मंडलोई, श्री दीपक जोशी, श्री संदीप जोशी, श्री डी डी पोत्दार श्री विजयनारायण व्यास, श्री विश्वनाथ व्यास का सहयोग रहा।

परिणय बंधन

खंडवा। शुक्रवार दिनांक 27 फरवरी 09 को चि. रंजन आत्मज श्री नवीन पोत्दार खंडवा का शुभ-विवाह श्री विजय रावल उज्जैन की सुपुत्री सौ. कां. दीपिका के साथ सानंद सम्पन्न हुआ एवं बटुक चिरंजीव गुंजन-सुपुत्र श्री नवीन पोत्दार का यज्ञोपवित संस्कार सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर वर-वधु को समाज के गणमान्य सदस्यों सहित अध्यक्ष श्री देवीदास पोत्दार ने आशीर्वाद प्रदान किया।

-सरोजकुमार जोशी, खंडवा

'माधव-निकुंज' वास्तु पूजन एवं गृह-प्रवेश

खंडवा। दिनांक 21 फरवरी शनिवार को श्री सरोजकुमार आत्मज श्री जी.एम. जोशी आनन्द नगर खंडवा के नव-निर्मित भवन 'माधव-निकुंज' में वास्तु शांति, गृह-प्रवेश एवं श्री सत्यनारायण कथा का आयोजन किया गया इस अवसर पर सजातीय बंधुओं सहित क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा में वृद्धि की।

जय हाटकेशवाणी परिवार की ओर से श्री जी.एम. जोशी एवं परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं।

महाशिवरात्रि पर्व सम्पन्न

पीपलरावां। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महाशिवरात्री पर्व स्थानीय नागर समाज ने परिषद उपाध्यक्ष श्री त्रिभुवनलाल मेहता के मार्ग दर्शन में धूमधाम से मनाई। सर्वप्रथम स्थानीय नागर धर्मशाला में स्थित नागरों के ईष्टदेव भूत-भावन भगवान की हाटकेश्वर पर दुग्धाभिषेक, पूजन-अर्चन, आरती पश्चात महाप्रसादी वितरण हुआ। मुख्य यजमान थे कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार शुक्ल व्यक्त किया। सदस्यो ने भगवान हाटकेश्वर के श्रीचरणों में अध्यक्ष श्री हरि नारायण नागर के स्वास्थ्यलाभ की कामना की। इस अवसर पर सचिव रमेश चन्द्र नागर, डॉ. श्री चन्द्रकांत त्रिवेदी, डॉ. श्री अशोक व्यास, श्री चन्द्रकांत व्यास (दादा भाई) विशेष रुप से उपस्थित थे। विगत वर्ष की तरह इस वर्ष भी परिषद अध्यक्ष श्री हरिनारायण नागर की ओर से सम्पूर्ण नागर समाज पीपलरावां के फलाहार की व्यवस्था की गई। समस्त कार्यक्रम का संचालन पत्रकार श्री भूपेन्द्र नागर ने किया।

प्रस्तुति-श्री हरिनारायण नागर पीपलरावां

नागर संस्कृति और संस्कार पर वृहद ग्रंथ प्रकाशित होना चाहिए

श्री हीरूभाई ने जैसा कहा कि अखिल भारत नागर परिषद को समाज के लिए हमेशा उपयोगी काम के लिये नागर संस्कृति और नागर संस्कार इस नाम से एक वृहद ग्रंथ तैयार कर प्रगट करना चाहिए। जिसमें नागरों का संपूर्ण इतिहास आ जाये और उसके साथ सांस्कृतिक और संस्कारिक पहलू भी आ जाये।

विविध प्रकार के नागरो के बीच एकता सिद्ध करना परिषद का कार्य है उसी तरह ऐसा साहित्य तैयार कर पाना और उसे प्रकाशित करना भी परिषद का कार्य है। भिन्न-भिन्न नागरों के बीच एकता की बाते और भाषण हम बहुत सालों से करते आ रहे हैं। फिर भी उस दिशा में कितनी प्रगति हुई है वह हम सब जानते है समझते है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें यह काम छोड़ दने चाहिए। सामाजिक परिवर्तन एक जटिल और धीमी प्रक्रिया है। अगर ऐसा ग्रंथ तैयार होगा तो वह हमेशा मूल्यवान रहेगा। परिषद ने कुछ अच्छा कार्य किया ऐसा माना जायेगा। समाज के लोगों का ज्ञान और समझदारी में वृद्धि होने से उच-नीच का मिथ्या भेद शायद भूल जायेंगे और एकता के कार्य को मदद मिलेगी।

पूर्वकाल से नागर समाज ने जो विद्वता और बुद्धिमता दर्शायी है वह समाज के वंशजों के पास इतिहास से संबंधित साधन और आधार न हो ऐसा तो मान नहीं सकते अगर यह कार्य परिषद उठाती है तो समाज को जरुर उपयोगी बना सकती है। नागरों की उत्पत्ति और फिर उसके विभाग के बारे में भिन्नता भी बहुत है। किसी ने भी विवेचना की दृष्टि से ऐतिहासिक उदाहरण की खोज करने का प्रयास भी नहीं किया सभी पुराणकथाओं के आधारभूत इतिहास (गिनकर) या स्वीकार कर चल नहीं सकता उसके लिए संशोधन युक्त काम होना चाहिए। संशोधन वह धूल धोये का धंधा है। उसमें अनेक पुस्तकों का सार निचोड़कर सत्य प्रस्तुत करना होता है। उसके लिये संकल्प चाहिए, लगातार परिश्रम चाहिए। विषय की गहराई में उतरने की दृष्टि चाहिए। जो जानते उसे जानना चाहिए और जो जानते है उसे सुधारना ऐसी प्रवृत्ति को शोधन कहते है। परिषद को यह कार्य अपना समझना चाहिए। इसके लिये विद्वानों के पास मेटर तैयार करवाना चाहिए। मेटर तैयार कराकर पुस्तक स्वरुप में छापकर उसे प्रगट करने के पीछे जो खर्च होता है उसे परिषद को करना चाहिए। यह कार्य कठिन है पर असंभव नहीं, क्योंकि समजा में अच्छे कार्य कठिन है पर असंभव नहीं, क्योंकि समाज में अच्छे कार्य के लिये धन देने वालों की संख्या बढ़ रही है। हाटकेश मित्र जैसी संस्था भी उसमें सहयोगी बन सकती है।

खंड 1 नागरोंव्यति और हाट केशोत्पत्ति

इस बाबत भावनगर के श्री मानशंकर पीताम्बर दास मेहता ने सन् 1922 में यानि की 86 साल पहले बहुत अच्छा और संशोधनात्मक कार्य किया है उनकी पुस्तक का नाम नागोत्पत्ति है।

ऐसा ही एक पुस्तक नागरोंत्पत्ति पंडित गंगा शंकर पंचोली ने लिखा है और वह हिन्दी में है। इस विषय की चर्चा और बहुत सी पुस्तके और लेखों में मिल सकती है।

खंड 2 नागर संस्कार और रिवाज

नागरों के अलग-अलग विभाग और अलग-अलग प्रदेशों में रिवाज एक समान नहं है। उसमें बहुत बड़ी भिन्नता फैली है। इसके अलावा संस्कारों की उत्पत्ति और उसके रहस्य में बहुत समानता होती है। सभी प्रकार के नागरों को लक्ष में रखकर इस पुस्तक को तैयार करने का ध्येय होना चाहिए। जन्म से मरण तक के सभी संस्कार इस पुस्तक में आ जाये ऐसी अपेक्षा है। प्रत्येक संस्कार या उसके प्रसंग के लिये उपयोगी जानकारी उस पुस्तक से मिल सके ऐसी वह होनी चाहिए समाजजनों के प्रसंग या संस्कार विधि समझदारी से करने लगे यही उद्देश्य होना चाहिए।

खंड 3 छः प्रकार के नागर अथवा विविध प्रकार के नागर

वडनगर, विसनगरा, प्रश्नोरा, कृष्णोरा, साहोदरा, चित्तोड़ा, यह छः प्रकार के विशेष जाने-माने नागर के अलावा कम जाने माने नागर भी है। यह तमाम प्रकार के नागरों की जानकारी सिलसिलेवार इस पुस्तिका में हो ऐसी अपेक्षा है। छः प्रकार के नागरों के लक्षण और रिवाज के बीच भले ही विविधता और असमानता फैली है, पर उसमें सात्विक समानता है। यदि यह बात सत्य है और संभव है तो एकता साधने के ध्येय की बल मिलेगा।

-नरेश राजा, अहमदाबाद

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)
हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान
(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)
10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 4060184, मो. 9425963751

नरसी मेहता के भक्ति गीत

नागर समाज के भक्त कवि नरसि मेहता की काव्य रचनाओं को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है (1) भागवत पुराण के दसवें स्कन्ध पर आधारित रचनाएं अथवा उनके मुक्त अनुवाद, (2) जयदेव की कृति गीत, गोविन्द (बारहवी शताब्दी) से प्रेरित रचनाएं, (3) आत्म चरितात्मक काव्य, (4) दार्शनिक/भक्ति पद। उनके भक्ति गीतों की श्रृंखला प्रारम्भ की जा रही है। अंग्रेजी से इसका हिन्दी में रुपान्तर प्रोफेसर सत्य प्रकाश आर्य ने किया है।

श्रृंगार के पद

(1) अनुवादक ने नरसी मेहता के गीतों का अनुवाद शब्दशः किया है। शब्दों एवं चित्रों का यथावत् अनुवाद किया गया है। तथा गीतों की मुख्य धारा की विवेचना नहीं की गई है। नरसी मेहता के शब्द स्वयं ही अपनी बात बोलेंगे।

(2) प्रत्येक गीत के प्रारम्भ में एक प्राक्कथन दिया गया है। प्राक्कथन में सामान्य राधाकृष्ण के प्रेम में आकंठ डूबी है। कृष्ण सामान्य नश्वर प्राणी नहीं है परन्तु विष्णु के अवतार हैं। यह सामान्य बोध है कि परमात्मा की एक झलक पाने के लिए भी साधकों को लम्बी साधना व तपस्या करना पड़ती है। परन्तु कृष्ण स्वयं आकर राधा को सरलता से मिलते हैं क्योंकि राधा का प्रेम उत्कट है। यह गीत भक्ति के इस सिद्धान्त को कि, परमात्मा के प्रति प्रेम अन्य सभी साधनों से श्रेष्ठतर है, प्रतिपादित करता है।

1. किन शुभ कर्मों का सम्पादन कर मैं जन्मी हूं कि मेरे प्रति भगवान स्वयं आकर अपना प्रेम व्यक्त करते हैं। वे पूरी सदाशयता से मेरे पास आते हैं तथा मेरे प्रति ही ललचाते हैं। उत्कृष्ट अमर विभूतियों का कथन है कि परमात्मा को केवल बुद्धि से प्राप्त नहीं किया जा सकता। परन्तु वहीं भगवान सभी बंधनों का उल्लंघन कर गलबहिया डालकर मेरा आलिंगन करते हैं। भगवान की एक झलकी पाने के लिए साधक तप करता है। साधना करता है, कष्ट उठाता है क्योंकि वह सर्वोपरि है। उस भगवान को मैं प्रेम के सहारे सहजता से प्राप्त करती हूं। उच्चतम वैकुण्ठ से अपनी आराम दायक शेष शैया त्यागकर भगवान मेरे आवास पर पावन प्रेम के अधीन अकेले ही पधारते हैं। वे पीताम्बर वेश में मेरी सेज पर आते हैं। पवित्र ग्रन्थों में लेख है कि प्रेम पगे भक्तों के प्रति वे अपनी प्रतिज्ञा का निर्वाह करते हैं। नरसी कहते हैं कि मेरी दीनता को पुरस्कृत करते हुए भगवान मुझे मिलते हैं। यह गीत दिव्य प्रेम का गौरव गान करता है। इसमें इस विचार पर बल है कि पुरुष की तुलना में श्री (व्यक्तित्व में स्त्रीत्व) को प्रेम अधिक सरलता से मिलता है। राधा तथा गोपियों ने भगवान के प्रेम में पूर्ण समर्पण किया अतएव पुरुष भक्तों/गोपों की तुलना में उन्हें मुक्ति का प्रसाद पहले मिला। यही कारण है कि अनेक भक्त, तमिल आलवार सन्तों सहित, अपने आपको कृष्ण की गोपियां समझते हैं एवं तदनुसार आचरण करते हैं।

2. हमारे सभी अवतारों में नारी श्रेष्ठतम है। बलभद्र/बलराम नारी के समक्ष समर्पित है। सरस साथी मुझे प्राप्त करने में आपके पुरुषत्व का कोई लाभ नहीं। पुरुष को मुक्ति का मार्ग तभी मिलता है जब वह विनम्र हो, समर्पित हो तथा भगवान के प्रति सेवानिष्ठ हो। पुरुष अपनी प्रेयसी को लुभाने एवं विलासी क्रीड़ा के लिए कभी विनम्र होता है तो कभी रसिकता से रोष व्यक्त करता है। इन्द्र, महान ऋषि मुनि तथा निराकार भगवान भी गोपियों की चरण धूलि प्राप्त करने के लिए नत मस्तक हैं। इसके बावजूद वे गोपियों के लिए कम महत्ता के हैं। उनमें नन्द बाबा के पुत्र सरीखी पुरुषत्व की आभा नहीं है। वेद, वेदान्त एवं छै उपनिषदों के तथ्य, सत्य एवं कथ्य का सुखद अनुभव वास्तव में केवल एक आपकी प्रसन्न पत्नी को ही दिन प्रतिदिन होता रहता है। मार्ग पर विचरते पशु की भांति जिसके गले में लटकती ढीली रस्सी बंधी है, मैं खो जाना नहीं चाहता। नरसी के स्वामी गिरधर, जो सांवले-सलौने हैं, उसके सपनों को पूरा करेंगे। मैं हाथ जोड़कर नमन करता हूं।

प्रस्तुति-पं. हरिवल्लभ नागर
अनूप नगर, इन्दौर

हाटकेश्वर जयंति महोत्सव एवं निर्वाचन कार्यक्रम

इन्दौर। अ.भा. नागर परिषद शाखा इन्दौर के तत्वावधान में आगामी 8 अप्रैल 09 को हाटकेश्वर जयंति का पर्व परम्परागत उत्साह के साथ मनाया जाएगा।

खजराना में हाटकेश्वर मंदिर में पूजन-अर्चन, अभिषेक के पश्चात समीप ही पाटीदार धर्मशाला में आगामी तीन वर्षों के लिए नई कार्यकारिणी का निर्वाचन सम्पन्न होगा। अध्यक्ष पं. रमेश प्रसाद रावल ने अपील की है कि इस धर्ममय आयोजन में बड़ी मात्रा में समाजबंधु एकत्रित हों। अ.भा. नागर महिला मंडल, की अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई तथा शिवांजली पारमार्थिक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री आशीष त्रिवेदी ने भी आयोजन को सफल बनाने की अपील की है।

महिला मंडल की मासिक बैठक

फूलों की सजावट प्रतियोगिता

इन्दौर। 26 फरवरी गुरुवार को नागर महिला मंडल की मासिक बैठक अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई के निवास पर सम्पन्न हुई, जिसमें ताजे एवं सूखे फूलों की सजावट प्रतियोगिता का सभी उपस्थित 40 महिला सदस्यों ने आनन्द उठाया। फ्लॉक्स लिली, गुलाब व सजावटी पत्तियों का सुन्दर प्रदर्शन किया गया। बैठक में श्रीमती अरुणा व्यास, दिव्या मंडलोई, रेणुका मेहता, प्रियबाला मेहता, चारुमित्रा नागर ने हिस्सा लिया। श्रीमती जया शिन्दे (मालवा रोज सोसायटी) तथा लता नाईक ने पौधों, फूलों को लगाने पानी देने, तथा संरक्षण का तरीका बताया। धूप तथा छाया में कौन से पौधे लगाए जा सकते हैं। तथा मिट्टी एवं खाद कौन सी लेना है इसके बारे में जानकारी दी। श्रीमती शारदा मंडलोई एवं श्रीमती प्रियबाला मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया तथा विजेता प्रतिस्पर्धियों को पुरस्कार वितरित किए।

आगामी बैठक 21 मार्च को

नागर महिला मंडल की आगामी बैठक 21 मार्च 09 को आयोजित है। इसमें समाज की विशिष्ट महिलाओं का सम्मान किया जाएगा। तथा उनके अनुभव सुने जायेंगे। प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ श्रीमती संगीता विनोद नागर द्वारा एक कार्यशाला आयोजित की जा रही है। जिसमें वे संबंधित विषय की जानकारी विधि एवं लाभ के बारे में जानकारी देंगी। साथ ही विशेष रुप से सिरदर्द, चोट, पेट संबंधि रोग जोड़ दर्द, आँखों का उपचार, सायनस सर्दी का उपचार प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से बताएंगी। सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे अवश्य पधारें एवं एक दूसरे को फोन द्वारा सूचित करें। इस सूचना को ही निमंत्रण मानें।

-श्रीमती शारदा मंडलोई
331, एडी, स्कीम नं. 74, विजय नगर, इन्दौर फोन 2556266

पूज्य बाबूजी श्री शिवप्रसाद शर्मा की पावन स्मृति में

श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा यज्ञ
का भव्य आयोजन

मुरैना के सुप्रसिद्ध राष्ट्रपति पदक प्राप्त
डॉ. राधारमण शर्मा एवं डॉ. अनुराग शर्मा
के मुखारविन्द से **दिनांक 20 से 26 मई 2009**

स्थान- अवन्तिका परिसर, 20 जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर

नोट- सभी धर्मप्रेमी बंधु एवं जय हाटकेश वाणी के पाठक सादर आमंत्रित है।

होनहार-समाज सेवक अर्पित मेहता

अहमदाबाद। अ.भा. नागर परिषद् के युवा विभाग के प्रमुख के रुप में सबके चहेते 37 वर्षीय श्री अर्पित मेहता ने गत माह 'वाईब्रन्ट' गुजरात सरकार के साथ अलग-अलग प्रोजेक्ट के तहत 630 करोड़ रु. के एम.ओ.यु. साईन किए हैं। भातर तालुका के त्राणजा गांव के पास 110 एकड़ जमीन में कार्बन रहित पॉवर जनरेशन, एज्युकेशन, इको, टुरिज्म, स्पोर्ट्स पार्क, बायोटेक पार्क एवं रेसीडेन्सी टाऊनशिप के प्रोजेक्ट उन्होंने तैयार कर नई उड़ान का आगाज किया है।

एम.बी.ए. तक अध्ययनरत श्री अर्पित ने बताया कि उपरोक्त प्रोजेक्ट के अन्तर्गत 110 एकड़ जमीन में एक विशाल शैक्षणिक संकुल के साथ बिजली उत्पादन एवं पॉवर के क्षेत्र में कोयले के उत्पादन को घटाकर वैकल्पिक उर्जा का उपयोग हो सकेगा। यह श्रेष्ठ विचार 'कार्बन रहित शहर' का महत्व प्रतिपादित करता है। ज्ञातव्य है कि चीन का एक बड़ा शहर सम्पूर्ण सौर ऊर्जा से चल रहा है। यही नजारा अब गुजरात के खेड़ा जिले में देखा जा सकेगा। इसी प्रकार का प्रयोग भूतकाल में बड़े अबुधाबी में सफलतम रहा है। तथा युक्रेन के एमिंग शहर को 2007 में कार्बन न्यूट्रान टाऊनशिप घोषित किया गया।

श्री अर्पित मेहता ने आस्ट्रेलियन इंटरनेशनल स्पार्टस एकेडमी द्वारा स्पोर्ट्स हब, एज्युकेशन क्वीन्स लैंड इन्टरनेशनल द्वारा एज्युकेशन हब एवं आस्ट्रेलिया एंड फोर इको टुरिज्म, बायोटेक पार्क, कार्बन रहित ऊर्जा उत्पादन जनरेशन प्रोजेक्ट के लिए सहयोग प्राप्त करने का भरोसा दिया है। ग्रोवमोर बायोटेक लिमिटेड (इंडिया) के बैनर तले ये प्रोजेक्ट सम्पन्न किए जावेंगे।

औद्योगिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले श्री अर्पित मेहता गुजरात के सभी सिटी प्लस में डायरेक्टर के रुप में कार्यरत हैं। अहमदाबाद में कालुपुर स्टेशन के सामने बी.बी.सी. मार्केट के सफलता पूर्वक आयोजन किया है। धार्मिक क्षेत्र में उनकी विशेष रुचि है वे गुजरात ब्रम्ह समाज के युवा प्रमुख भी है। वे अपनी सम्पूर्ण सफलता का श्रेय माता श्रीमती नलिनी बहन मेहता एवं पिता श्री रजनी भाई मेहता जो अ.भा. नागर परिषद अहमदाबाद, गांधीनगर एवं खेड़ा विभाग के प्रमुख है। को देते हैं इनके संस्कार एवं आशीर्वाद की बदौलत ही श्री अर्पित मेहता सतत प्रोत्साहन पाकर नागर युवाओं को रोजगार देने तथा उनकी प्रतिव्यक्ति आय बढ़ाने के लिए उपरोक्त प्रोजेक्ट कर रहें हैं।

विशेष- फरवरी माह के अंत या मार्च के शुरुआत में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से इस वृहद् योजना का भूमि पूजन करवाया जाएगा।

प्रस्तुति- प्रणव जानी, असीत मेहता, अहमदाबाद

लघु कथा

आबरू

कथित अनियमितताओं के कारण प्रशासन और उनके बीच का विवाद छह माह से न्यायालय में लंबित है। इस दौरान उन्हें वेतन भी नहीं मिला है। उधार ले-लेकर के अपना काम चला रहे हैं। एक दिन चर्चा के बीच उनके परिचित रामसजीवनजी ने आदर्श बघारते हुए कहा- 'मैं भले ही भूखों मर जाऊं, पर किसी से एक पाई उधार न लूं।

तुम ठीक कहते हो भाई! ठंडी सांस भरते हुए उन्होंने कहा- भूखा मरने के लिए तो मैं भी तैयार हूं, पर तुम्हीं बताओ, अपनी बूढ़ी माँ और बच्चों को भूखा कैसे रखूं? मैं तो अधनंगा रह लूंगा, पर पत्नी को ऐसा कैसे रहने दूं?

-सूर्यकांत नागर

मां कौन है?

भगवान ने कहा- मां मेरी और से एक दूर्लभ तोहफा है।
समुद्र ने कहा- मां एक सीप है, जो संतान के लाखों रहस्यों को सीने में छिपा लेती है।
बादल ने कहा- माँ एक चमक है, जिसमें हर रंग उजागर होता है।
संतान ने कहा- मां ममता की अनमोल दास्तां पर अंकित है।
औरंगजेब ने कहा- माँ के बिना हर घर कब्रिस्तान है।
नादिर शाह ने कहा- मुझे मां और फूल में कोई अंतर नहीं दिखता।
मेरी नजर में- माँ के बिना बच्चे डाली से टूटे हुए फुल की तरह है जिसे हर कोई रोंदना चाहता है।

-श्रद्धा शर्मा

°ÃæÜè ÚU¤è› ÕÚUSæÜè ÕÚUæÌèÁæ ÁæÜè ÚU¤è› ÌÙè ÜãðÜè· ¤×è´ ÜãðØ

बरसाना भगवान श्रीकृष्ण और उनकी आह्लादिनी शक्ति राधा की लीला भूमि रही है। फाल्गुन शुक्ल की नवमी को होने वाली यहां की लट्ठमार होली देश-विदेश में प्रसिद्ध है। इसे देखने दुनिया के हर कोने से लाखों लोग हर साल यहां आते हैं। बरसाने में लाठियों से होली खेलने की विशिष्टता बिलकुल अनोखी है। राधा-कृष्ण की इस लीला भूमि के कण-कण में आज भी इतना रस व्याप्त है कि यहां लाठियां चलाकर भी रस में वृद्धि ही होती है। होली का रंग यहां स्थित श्रीजी मंदिर में वसंत पंचमी केदिन होली का डांढ़ा गड़ते ही छाने लग जाता है। मंदिर में आनेवाले दर्शनार्थियों केमाथे पर गुलाल लगना प्रारंभ हो जाता है। महाशिवरात्रि के दिन मंदिर से रंगीली गली तक होली की प्रथम चौपाई अत्यंत धूमधाम के साथ निकाली जाती है। इस चौपाई में गोस्वामीगण संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के बीच गान करते हुए चलते हैं। फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को श्रीजी मंदिर में राधा रानी के 56 भोग लगते हैं। फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को श्रीकृष्ण के प्रतीक के रूप में नंदगांव का एक गुसाईं बरसाना की गोपिकाओं को और बरसाना का भी एक गुसाईं नंदगांव जाकर वहां के गुसाइंयों को बरसाना में होली खेलने आने का निमंत्रण देता है। फाल्गुन शुक्ल नवमी को नंदगांव के तकरीबन छह सौ गोस्वामी परिवारों के हुरियारे अपनी-अपनी ढालों को लेकर नंदगांव स्थित नंदराय मंदिर में एकत्रित होते हैं और वहां से पैदल ही गाते-बजाते, नाचते-झूमते करीब छह किलोमीटर दूर स्थित बरसाना पहुंचते हैं। नंदगांव के इन हुरिहारों का बरसाना में पहला पड़ाव 'पीली पोखर' (प्रिया कुंड) पर होता है। यह वही सरोवर है, जिसमें राधा रानी ने हल्दी का उबटन लगाकर स्नान किया था। इस कारण इसका रंग आज भी पीला है। होली के रसिया गाते, अबीर-गुलाल उड़ाते और नाचते-झूमते नंदगांव के हुरियारे बरसाना के ब्रह्मेश्वर गिरि केउच्च शिखर पर स्थित श्रीजी मंदिर पहुंचते हैं। यहां राधा रानी की मनोहारी प्रतिमा के समक्ष बरसाना और नंदगांव के गुसाइंयों का समाज गायन होता है। इस गायन में नंदगांव के गुसाईं अपने को श्रीकृष्ण का प्रतिनिधि मानकर राधा रानी के प्रतीक के रूप में बरसाना के गुसाइयों को और बरसाना के गुसाईं खुद को राधा का प्रतिनिधिमानकर नंदगांव के गुसाइयों को प्रेमभरी गालियां सुनाते हैं। साथ ही सभी परस्पर टेसू के फूलों से बने रंग से होली खेलते हैं। नंदगांव के गुसाईं बरसाना की गोपिकाओं से जमकर ठिठोली करते हैं। ठिठोली होली के बाद बरसाना की गोपिकाएं और नंदगांव के हुरियारे लट्ठमार होली खेलने के लिए रंगीली गली के चौक पर जमा होते हैं। गोपिकाओं के हाथों में मेंहदी, पैरों में महावर और आंखों में कटीला काजल और तन पर गहने होते हैं। इसके अलावा उनके हाथों में लंबी-लंबी लाठियां और मुंह पर लंबे-लंबे घूंघट होते हैं। ये गोपिकाएं अपने-अपने घूंघटों की ओट में नंदगांव के हुरियारों पर उछल-उछल कर अपनी-अपनी लाठियों से बड़े ही प्रेमपूर्ण प्रहार करती हैं। इन प्रहारों को नंदगांव के हुरियारे अपनी-अपनी ढालों पर रोकते हैं। ये प्रहार जबरदस्त होते हैं। अगर इस लट्ठमार होली में किसी के खून आदि निकल आए, तो उसे शुभ समझा जाता है। यह लट्ठमार होली काफी देर तक चलती है। जब यह होली हो चुकती है, तब बरसाना की गोपिकाएं अपनी लाठियों को दर्शकों के माथे पर टिका-टिकाकर उनसे ईनाम मांगती हैं। जो देना चाहे वह दे, किसी से कोई जबरदस्ती नहीं होती। इस वर्ष यह होली 15 मार्च को हो रही है। फाल्गुन शुक्ल दशमी को इसी प्रकार की लट्ठमार होली नंदगांव में होती है। नंदगांव में होने वाली लट्ठमार होली में हुरिहारे होते हैं बरसाना के गुसांई और लाठियां चलाती हैं नंदगांव की गोपिकाएं। कहा गया है कि बरसाना और नंदगांव की लट्ठमार होली में जो रस बरसता है, वह स्वर्ग में भी दुर्लभ है। ऐसो रंग बरस्यो बरसाना, जो रंग तीन लोक में नांय। अतः इस होली को देखने के लिए 33 करोड़ देवता भी स्वर्ग-पौरी छोड़कर बरसाना-नंदगांव में आते हैं। यह भी कहा गया है कि बरसाना में जब तक लट्ठमार होली होती है, तब तक सूर्यास्त नहीं होता, क्योंकि सूर्य भगवान स्वयं इस होली को देखने के लिए यहां उपस्थित होते हैं। बरसाना दिल्ली-आगरा राजमार्ग पर स्थित कोसीकलां से सात किलोमीटर और मथुरा से (वाया गोवर्धन) 47 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

ÂýSÌéçÌ- ØæÎßðàæ ÌæÜü

ट्रांसफेटी एसीड से सावधान

बाजार में वनस्पति घी, सस्ते तेल एसेंस मिलाकर शुद्ध घी के नाम पर सस्ते दामों पर नकली घी बेचा जा रहा है, कई समाचार पत्रों में बार-बार इस तरह समाचार मय सबूत के आ रहे है। अभी तक छपे समाचारों के अनुसार कई ब्राण्डों के तेल और वनस्पति घी, में बहुत अधिक मात्रा में ट्रांसफेटी एसिड पाया गया। जो कि कोलेस्ट्रोल को बढ़ाता है जिसका सीधा असर दिल एवं कीडनियों पर घातक रुप से होता है। वनस्पति घी बनाने की विधि में हाईड्रोजनेशन के कारण ट्रांसफेटी एसिड बनते है जो कि स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकरक होते है स्ट्रांसफेट, उच्च कोलेस्ट्रोल (HDL) को घटाता है और निम्न कोलेस्ट्राल को बढ़ाता है। इससे आवश्यक अनुपात बिगड़ता है जिससे हृदयघात की संभावनाये बढ़ जाती है।

शुद्ध घी में ट्रांसफेटी एसिड की मात्रा नगण्य होती है, अतः अच्छे ब्रांड का शुद्ध घी जैसे अमूल, अनिक, सांची, पारस, सौरभ और ब्रिटानिया आदि का उपयोग कर परिवार के स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता लाये। घी अधिकृत विक्रेता से ही खरीदे एवं सुनिश्चित करे कि आप शुद्ध घी ही खरीद रहे है। बनावटी एवं नकली घी, तेल आदि खरीदकर अपने एवं अपने परिवार के स्वास्थ्य से खिलवाड़ न करें। (जनहित में जारी)

लेखक श्री अशोक फडनीस, अनिक इंडस्ट्रीज लिमिटेड के मुख्य कार्यपालन अधिकारी है।

सम्वेदना

साथ सब ना चल सकेंगे
ये तो हम भी जानते है
लोग रास्ते में रुकेंगे
ये तो हम भी जानते है
दूसरों आंख का आंसू-आंसू जिसे रुला दे-
वह आये हमारे साथ-साथ
काफिला चलता चला जावेंगे
काफिला चलता चला जायेगा।
बाकि भीड़ चाहे लौट जाये

संकलन- श्रीमती शारदा मण्डलोई फोन 2556266